RNI-RAJBIL/2009/32418

Vol: 8, Issue : 2, July-December 2016

Samvahini

Half Yearly Newsletter | Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun

www.jvbi.ac.in

जैन विश्वभारती संस्थान की ओर से प्रो. अनिल धर, जैन विश्वभारती संस्थान द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित तथा गिरधर ऑफसेट प्रिण्टर्स, लाडनूं में मुद्रित एवं जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं (राजस्थान) में प्रकाशित। सम्पादक-नेपाल चन्द गंग

A graded by NAAC

NAAC Re-accredited 'A' Grade Certificate

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद

NATIONAL ASSESSMENT AND ACCREDITATION COUNCIL

An Autonomous Institution of the University Grants Commission

Certificate of Accreditation

The Executive Committee of the
National Assessment and Accreditation Council
on the recommendation of the duly appointed
Peer Team is pleased to declare the
Jain Vishva Bharati Institute
(Deemed to be University u/s 3 of the UGC Act, 1956)
Ladnun, Dist. Nagaur, Rajasthan as
Accredited
With CGPA of 3.11 on the four point scale
at A grade
valid up to July 07, 2018

Date : July 08, 2013

Director

EC/44/RAR/25

आचार्य महाश्रमण

अनुशास्ता

जैन विश्व भारती संस्थान

अनुशास्ता उवाच

ज्ञान विकास का महत्त्वपूर्ण अंग है- प्रश्न करना

स्वाध्याय का एक प्रकार है- प्रतिप्रश्ना। अध्यापन की प्रक्रिया में जैसे पढ़ाना महत्त्वपूर्ण है तो प्रश्न करना भी बहुत महत्त्वपूर्ण है। जिस विद्यार्थी में प्रश्न करने की क्षमता होती है, वह विद्यार्थी प्रतिभावान होता है। जो सर्वज्ञ है, सब कुछ जानता है, उसे प्रश्न पूछने की जरूरत नहीं होती अथवा जो नासमझ है, कुछ समझता ही नहीं है, वह व्यक्ति भी प्रश्न नहीं करता। कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं, जिनमें समझ शक्ति होती है किन्तु संकोच या किसी अन्य कारण से प्रश्न नहीं पूछते। ज्ञान विकास का एक महत्त्वपूर्ण अंग है, प्रश्न करना।

प्रश्न हो सकता है कि प्रश्न करने से क्या लाभ है? प्रश्न करने से गुरु विस्तार और स्पष्टता के साथ बात को बताने का प्रयास करेंगे। परिणाम यह आएगा कि गुरु से अधिक ज्ञान मिल सकेगा और विषय की स्पष्टता हो सकेगी। ज्ञान की प्राप्ति में जहां कहीं कमी रह जाती है, उसको भरने का काम प्रश्न करता है। सुन्दर कहा गया है- ''जिज्ञासा ज्ञानजननी'' जिज्ञासा ज्ञान को पैदा करने वाली होती है।

संस्कृत साहित्य में कहा गया- ''न संशयमनारुह्य नरो भद्राणि पश्यति'' संशय के बिना आदमी कल्याण को नहीं देखता और ज्ञान की विशिष्ट भूमिका को प्राप्त नहीं होता। यहां संशय शब्द का अर्थ है जिज्ञासा। विद्यार्थी अध्यापक के पास पढ़ता है। उसे जहां-जहां विषय की अस्पष्टता हो, वहां जिज्ञासा करे, प्रश्न उठाए, चालना करे। जैन अध्ययन पद्धति में एक शब्द आता है चालना। अध्ययन-अध्यापन की प्रक्रिया के छह अंग हैं-

संहिता च पदंचैव, पदार्थः पदविग्रहः।
चालना प्रत्यवस्थानं, व्याख्यातंत्रस्य षड्विधम्।।

सबसे पहले उच्चारण करना, फिर पदों की गणना करना, पदों का विग्रह करना, प्रश्न उठाना और समाधान देना, यह एक अध्ययन-अध्यापन की पूरी प्रक्रिया हो जाती है।

महिला छात्रावास का जीर्णोद्धार कर सुविधा सम्पन्न बनाया

जैन विश्व भारती संस्थान के आचार्य तुलसी महिला छात्रावास के जीर्णोद्धार का कार्य करवाया गया, जिसका दिनांक 17 सितम्बर, 2016 को उद्घाटन किया गया। महिला छात्रावास के जीर्णोद्धार का उद्घाटन जैन विश्व भारती के अध्यक्ष डॉ. धर्मचन्द लूंकड़ ने किया। इस जीर्णोद्धार उद्घाटन कार्यक्रम में संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़, ट्रस्टी भागचन्द बरड़िया, जीवणमल मालू आदि प्रमुख लोग उपस्थित थे।

अब विश्वविद्यालय का महिला छात्रावास नवीन साज-सज्जा, फर्नीचर आदि सुविधाओं से सुसज्जित कर दिया गया है। इस छात्रावास के नवीनीकरण कार्य का श्रेय मातृ-संस्था जैन विश्व भारती के अध्यक्ष डॉ. धर्मचंद लूंकड़ को जाता है। वर्तमान अध्यक्ष श्री रमेश चंद बोहरा ने भी अवशिष्ट रहे कार्य को गति प्रदान की तथा समय पर उसे सम्पन्न करवाया।

संस्थान इसके लिये जैन विश्व भारती एवं निवर्तमान व वर्तमान अध्यक्ष का आभारी रहेगा।

Samvahini

वर्ष-8, अंक-2
जुलाई-दिसम्बर, 2016
जैन विश्वभारती संस्थान
(अर्द्धवार्षिक समाचार पत्र)

संरक्षक
प्रो. बच्छराज दूगड़
कुलपति

सम्पादक
नेपाल चन्द गंग

कम्प्यूटर एण्ड डिजाईन
पवन सैन

प्रकाशक
जैन विश्वभारती संस्थान
लाडनूँ – 341306
नागौर, राजस्थान
दूरभाष : (01581) 226110 226230
फैक्स : (01581) 227472
E-mail : jvbiladnun@gmail.com
Website : www.jvbi.ac.in

सम्पादकीय

जैन दर्शन एवं प्राच्यविद्याओं के विकास के साथ प्रदेश का बेहतरीन विश्वविद्यालय बनने की ओर अग्रसर

जैन विश्व भारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) उतरोत्तर प्रगति पथ पर अग्रसर है। कुलपति प्रो. बच्छराज जी दूगड़ के कुशल नेतृत्व में यह विश्वविद्यालय प्रयोगधर्मा बनकर उभरा है। संस्थान में संचालित कक्षाओं को स्मार्ट क्लासेज में बदलने, संस्थान की विशाल लाईब्रेरी को डिजीटल स्वरूप देने, डिजीटल स्टुडियो की स्थापना आदि इस विश्वविद्यालय को प्रदेश के अन्य विश्वविद्यालयों की तुलना में बेहतर बनाने की दिशा में किये जा रहे प्रयोग हैं। पहली बार विश्वविद्यालय में ड्रेस कोड लागू किया गया है। विश्वविद्यालय में विविध नियमावलियों को तैयार किया जाकर उन्हें लागू किया गया है। इनमें छात्रावास नियम, मैस नियम, अतिथिगृह नियम, छात्रवृति नियम, शोध परियोजना नियम, प्रोफेसर एमिरेट्स नियम, ट्यूशन फीस नियम, संसाधनों का सम्यक् उपयोग सम्बंधित नियम शामिल हैं। कर्मचारियों में गुणवत्ता के विकास के लिये नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया है।

जैन दर्शन, प्राकृत भाषा एवं प्राच्य विद्या की उन्नति के लिये विश्वविद्यालय में विशेष प्रयास किये जा रहे हैं। जैन विद्या से सम्बंधित लघु अवधि पाठ्यक्रमों के विकास का प्रयास इसी दिशा में एक कदम है। विश्वविद्यालय में जैन जीवनशैली, जैन पर्यावरण विज्ञान, जैन ज्योतिष, जैन प्रबंधन, जैन आहार विज्ञान, पांडुलिपि विज्ञान, जैन मनोविज्ञान, जैन कलह प्रबंधन विषयों पर दो चरणों में पाठ्यक्रमों का विकास किया जाकर आगामी सत्र से उन्हें शुरू किये जाने के प्रयास हो रहे हैं। इनके अलावा जैन शिल्प, जैन वास्तु, जैन कला, जैन ब्रह्मांड विज्ञान, जैन गणित आदि विषयों को भी स्वीकृति प्रदान की गई है।

जैन विद्वानों से सम्पर्क करके उन्हें संस्थान में हर माह तीन से सात दिनों का समय देने के लिये स्वीकृतियां प्राप्त की गई है। जैन विद्या के विकास के लिये संस्थान में पाक्षिक व्याख्यानमाला प्रारम्भ की गई है तथा संस्कृत व प्राकृत भाषाओं के 6 माह के प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम प्रारम्भ किये गये हैं। जैन विद्या परियोजनाओं के विकास के लिये कार्यशाला का आयोजन व मार्गदर्शिका तैयार करवाई गई है।

संस्थान में विज्ञान की आधुनिक संयंत्रों व सुविधाओं से सुसज्जित प्रयोगशालाओं की स्थापना की गई है। संस्थान में विज्ञान संकाय एवं चार-चार वर्षीय समन्वित पाठ्यक्रम बीए-बीएड तथा बीएससी-बीएड भी शुरू किये जा चुके हैं। राजस्थान कौशल एवं आजीविका विकास निगम द्वारा प्रायोजित योग, ध्यान एवं प्राकृतिक चिकित्सा प्रशिक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत तीन-तीन माह के प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम संचालित किये जा रहे हैं। जैन विश्वभारती संस्थान मान्य विश्वविद्यालय निरन्तर विकास की ओर अग्रसर है तथा बुलन्दियों को छूने को बेताब है।

– नेपाल चन्द गंग

Mahadev Lal Saraogi
Anekant Shodhpeeth

International Summer School

Understanding Jainism Programme

International Summer School on **'Understanding Jainism'** Programme was organized by Anekant Shodh Peeth from July 23 to August 12, 2016. The understanding Jainism Theory and Practice Programme of JVBI emphasizes Jain Philosophy, Ethics, Nonviolence, Meditation, Art and Architecture and life-style in India. It is interdisciplinary in nature, with participating faculty of Humanities, Social Science and linguistics. The programme was organised keeping in view to orient the participants with the concept and ideas of Jainism and to develop the attitude of nonviolence. The practical aspect was of the imparting training of Preksha Meditation for emotionally balanced life-style. In addition of this a special course on Oriental Language was also organised for the participants and they were offered Prakrit, Sanskrit and Hindi Languages.

Beside academic programme students had special visits to wild life sanctuary, some places of archaeological and historical importance of Ladnun and adjoining areas, trekking programme to Dungar Balaji and interaction with spiritual personalities. The Visit to local Jain families were organised in order to understand the indian culture, Jain Life style and the Socio-Cultural aspects of Jain laities. Mehandi, Cultural interaction and Personal meeting with monks and nuns were also held. Visit to schools and many other activities were appreciated and hailed by the participants.

Several students from foreign countries participated in this programme. The entire academic session was held through lectures, discussion and presentation. Students were provided study notes of the subjects, various lectures were given in-house professors and several academician of National/International repute also delivered the lectures. On the completion of courses all the students appeared for exams and were awarded with the certificate and grade. The programme was completely successful carried out under the enlightened guidance of hon'ble Vice-Chancellor Prof. B.R. Dugar. The academic Convener of the programme was Dr. Samani Shreyas Prajna and Samani Amal Prajna.

Participants Comments

Van Overberghe Tine remarked that the programme was instrumental for the academic excellence and emotional and spiritual elevation. JVBI has the wonderful environment, good schedule and great diversity of speakers. **Laurien Janssens** observed that the courses content was weld deliberated and designed. Preksha Meditation and Yoga classes were a very important experimental component of the programme. **Lena De Aguirre Y Otegui** commented that it was excellent over the whole time and remarked that this was the unforgettable moments of my life. The teaching process and the hospitality rendered to the participants were appreciable.

चार वर्षीय पाठ्यक्रम

खुली सोच विकसित करें- दूगड़

चार वर्षीय बी.ए./बी.एस.सी.-बी.एड कोर्स का शुभारम्भ

शिक्षा विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान के अन्तर्गत चार वर्षीय बी.ए./बी.एस.सी.-बी.एड. कोर्स का शुभारम्भ हुआ 10 नवम्बर 2016 को उद्घाटन का कार्यक्रम घोड़ावत ऑडीटोरियम में कुलपति प्रो. बी. आर. दूगड़ की अध्यक्षता में किया गया। अपने अध्यक्षीय उदबोधन में प्रो. दूगड़ ने नवागन्तुक विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि विद्यार्थी खुली सोच विकसित करने का प्रयास करें। अपने रास्ते का स्वयं चुनाव करते हुए, उस पर आत्म विश्वास के साथ आगे बढ़ें। इस अवसर पर कार्यक्रम को सान्निध्य प्रदान कर रही समणी डॉ. ऋजुप्रज्ञा ने कहा कि विद्यार्थी जीवन में सही दिशा व सही चिन्तन के बिना विकास संभव नहीं है और सही दिशा शिक्षा से ही मिलती है।

कुलसचिव विनोद कुमार कक्कड़ ने विद्यार्थियों को संस्थान का परिचय देते हुए संस्थान के नियम-कायदों से अवगत करवाया। शिक्षा विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने विद्यार्थियों को अतिथियों का परिचय प्रदान करते हुए चार वर्षीय पाठ्यक्रम के सम्बन्ध में बताया। कार्यक्रम में उपस्थित नवागन्तुक विद्यार्थियों में से सुरक्षा जैन, रागिनी शर्मा तथा अल्का चौधरी ने अपनी प्रस्तुतियां दी। कार्यक्रम में समस्त शिक्षा संकाय सदस्य, अन्य विभागों के आचार्यगण तथा शिक्षा विभाग के समस्त विद्यार्थी उपस्थित रहे। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. गिरधारी लाल शर्मा ने तथा मंच संचालन डॉ. आभा सिंह ने किया।

सड़क सुरक्षा पर व्याख्यान

सड़क सुरक्षा बोझ नहीं, कर्तव्य है-चोयल

विश्वविद्यालय के एसडी घोडावत ऑडिटोरियम में 12 दिसम्बर को कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड की अध्यक्षता में सड़क सुरक्षा विषयक व्याख्यान का आयोजन किया गया। क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी भरतपुर डॉ. नानूराम चोयल ने सड़क सुरक्षा की जानकारी देते हुए कहा कि सड़क की सुरक्षा बोझ नहीं बल्कि कर्तव्य है। सुरक्षा से ही मानव जीवन की रक्षा की जा सकती है। उन्होंने बताया कि देश में प्रतिवर्ष लाखों दुर्घटनाएं होती है, जिनमें बड़ी संख्या में लोगों की मौत हो जाती है। डॉ. चोयल ने परिवहन नियमों की जानकारी देते हुए रोड़ पर सुरक्षा के साथ कैसे वाहन संचालित करें, की जानकारी दी। इस अवसर पर डॉ. चोयल ने छात्र-छात्राओं को रोड़ सुरक्षा की शपथ भी दिलायी।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड ने कहा कि आज सड़क सुरक्षा के प्रति सबको जागरूक होना होगा। स्वागत भाषण कुलसचिव विनोद कुमार कक्कड ने एवं आभार ज्ञापन प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. विवेक माहेश्वरी ने किया।

पयुर्षण पर्व मनाया

विकास में सहायक बनता है ज्ञान का भाव : मुनि विमल कुमार

जैन विश्वभारती विश्व विद्यालय के तत्वावधान में भिक्षु विहार में मुनि विमल कुमार के सान्निध्य में पयुर्षण पर्व का आयोजन 9 सितम्बर, 2016 को समारोह पूर्वक किया गया। मुनि श्री ने उपस्थित विश्वविद्यालय परिवार को संबोधित करते हुए कहा कि पयुर्षण पर्व राग-द्वेष से मुक्त होकर शांति का मार्ग है। उन्होंने कहा कि एक साथ काम करने से बहुत बार व्यक्ति का अनुकूल-प्रतिकूल व्यवहार का सामना करना पड़ता है लेकिन परस्पर क्षमा का भाव विकास में सहायक बनता है। मुनि श्री ने कहा कि क्षमा करने वाला व्यक्ति ही जीवन में मन, वचन व कर्म से शुद्ध रह सकता है।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड ने कहा कि भारतीय संस्कृति में विविध पर्व एवं त्यौहार मनाये जाते है लेकिन जैन धर्म का पयुर्षण पर्व विशिष्ट पर्व है। इस पर्व के माध्यम से शुद्ध मन, भाव से क्षमायाचना की जाती है, जो व्यक्ति को शांति की ओर ले जाती है। मुनि धन्य कुमार ने गीतिका के माध्यम से अपने विचार रखे। मुनि मधुर कुमार ने पर्व की विशेषता पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. अनिलधर सहित सभी सदस्य उपस्थित थे। इससे पूर्व कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड की अध्यक्षता में महाप्रज्ञ सभागार में क्षमापना पर्व का आयोजन किया गया। जिसमें कुलसचिव प्रो. अनिलधर, डॉ. विजेन्द्र प्रधान, डॉ. प्रद्युम्नसिंह शेखावत, डॉ. योगेश जैन, डॉ. युवराजसिंह, डॉ. जसवीर सिंह, नेपाल चन्द गंग, डॉ. रविन्द्र सिंह, नुपुर जैन, डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज सहित अनेक लोगों ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संयोजन डॉ विवेक माहेश्वरी ने किया। इसी प्रकार आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय एवं शिक्षा विभाग के संयुक्त तत्वावधान में संवत्सरी पर्व का आयोजन कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड की अध्यक्षता में मनाया गया। प्रो. दूगड ने कहा कि क्षमा वीरों का भूषण है। संवत्सरी को जैन पर्वों का पर्वाधिराज बताते हुए आपसी राग-द्वेष भूलकर मैत्री भाव अपनाने का आहवान किया। कार्यक्रम में डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. जुगल दाधीच, पूजा जैन, विमला, निकिता दाधीच, रश्मि बोकड़िया आदि ने अपने विचार रखे। संचालन डॉ. गिरिराज भोजक ने किया।

पुलिस अकादमी में शुरू किया जायेगा जीवन विज्ञान व योग

एडिशनल एसपी योगेन्द्र फौजदार ने कहा है कि पुलिस अकादमी में जीवन विज्ञान एवं प्रेक्षा योग विषय को शुरू करना आवश्यक है और इसके लिए प्रयास किये जा रहे हैं। वे 27 दिसम्बर को यहां जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय का अवलोकन कर रहे थे। उन्होंने कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ से वार्ता के दौरान उन्होंने कहा कि यहां का शांत, मनोरम एवं आध्यात्मिक वातावरण इस विश्वविद्यालय को अन्य सभी विश्वविद्यालयों से अलग करते हैं। उन्होंने यहां दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, शिक्षा विभाग, आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय, योग एवं जीवन विज्ञान, जैन विद्या विभाग आदि सभी विभागों का अवलोकन किया।

राष्ट्रीय संगोष्ठी

भारतीय संस्कृति की संवाहक है प्राकृत भाषा एवं साहित्य : प्रो. दूगड़

संस्कृत एवं प्राकृत दोनों ही भाषाएँ भारतीय संस्कृति को प्रकट करने वाली है। इन दोनों ही भाषाओं का अपना-अपना महत्त्व है। अतः इनको केवल शास्त्राध्ययन तक ही सीमित नहीं रखा जाना चाहिये, अपितु इसको जन सामान्य तक पहुंचाने के लिए विशेष प्रयत्न किये जाने चाहिए। इस तरह के विचार संस्थान के प्राच्यविद्या एवं भाषा विभाग एवं राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली द्वारा 21 नवम्बर, 2016 को आयोजित प्राकृत साहित्य की विभिन्न विधाएं एवं भाषात्मक वैशिष्ट्य विषयक त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में अध्यक्षीय वक्तव्य के रूप में संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने प्रकट किये। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. सुषमा सिंघवी ने प्राकृत के सैद्धान्तिक पक्ष को प्रकट करते हुये उनकी सरलता एवं भाव गम्यता पर बल दिया। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि डॉ. रविन्द्र कुमार वशिष्ठ ने प्राकृत साहित्य में निहित वैज्ञानिक तथ्यों को उजागर करते हुये वर्तमान समय में हो रहे अनुसंधानों एवं तकनीकी विशेषताओं के लिए भी प्राकृत साहित्य को बहुत ही उपयोगी एवं महत्त्व का विषय माना। प्रो. दामोदर शास्त्री ने प्राकृत की सरलता को प्रतिपादित करते हुये संस्कृत और प्राकृत की तुलना की तथा उसमें प्राकृत की विशेषताओं को उल्लेखित किया। अतिथियों का स्वागत एवं संगोष्ठी के उद्देश्यों के बारे में बताते हुये विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा ने प्राकृत भाषा को अतिप्राचीन बताया तथा अशोक एवं खारवेल के अभिलेखों का उल्लेख किया। उन्होंने अनेक उद्धरणों के माध्यम से प्राकृत के महत्व को प्रतिपादित किया। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने किया। इस संगोष्ठी में देश के विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 30 विद्वानों ने भाग लिया। राष्ट्रीय संगोष्ठी के विभिन्न सत्रों में प्राकृत एवं संस्कृत भाषा के विभिन्न पहलुओं, उपयोगिता, महत्ता आदि पर विस्तृत चर्चाएं हुई।

प्राकृत भाषा सरल और मधुर और बोलचाल में उपयोगी है

राष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे दिन दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान जयपुर के प्रो सुर्दशन मिश्र तथा दिल्ली से आये डॉ. रविन्द्र कुमार वशिष्ठ ने अलग-अलग सत्रों की अध्यक्षता की। अपने सम्बोधन में डॉ. वशिष्ठ ने कहा कि प्राकृत भाषा सरल ही नहीं मधुर भी है। इसकी गहनता और दैनिक अभ्यास से दैनिक बोलचाल का हिस्सा बन सकती है। प्रो. त्रिपाठी ने प्राकृत भाषा को साहित्य रचना से अति समृद्ध भाषा बताते हुये कहा कि इसके अध्ययन से अध्येता को नवीन रसपान का आस्वादन मिलता है। यह साहित्य के हर क्षेत्र की रचनाओं से सराबोर है। कार्यक्रम के विभिन्न सत्र का संचालन डॉ. समणी भास्कर प्रज्ञा, शोधार्थी मनीषा जैन तथा शोभा नाई ने किया। इनमें बाहर से आये 12 प्रतिभागियों ने अपना शोध-पत्र वाचन किया।

प्राकृत की अप्रकाशित पांडुलिपियों पर शोध कार्य हो

राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन समारोह प्रो. समणी कुसुम प्रज्ञा की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय उदयपुर के प्रो. जिनेन्द्र कुमार जैन थे तथा विशिष्ट अतिथि जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय के कुलसचिव विनोद कुमार कक्कड़ थे। समापन समारोह की मुख्य वक्ता प्रो. समणी ऋतु प्रज्ञा थी। मुख्य अतिथि प्रो. जिनेन्द्र कुमार जैन ने कहा कि प्राकृत भाषा के उत्थान व उसे पुनः प्रचलन की भाषा बनाने के लिये सबके द्वारा मिलकर कार्य करने की जरूरत है। कार्यक्रम की अध्यक्षा प्रो. समणी कुसुम प्रज्ञा ने प्राकृत भाषा में लिखित अनेक पाण्डुलिपियां, जो अप्रकाशित है, उन पर शोध कार्य किये जाने की आवश्यकता पर बल दिया।

प्राकृत में प्रशासनिक शब्दावली तैयार हो

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि विनोद कक्कड़ ने कहा कि हमें प्राकृत भाषा को कार्यालयी भाषा के रूप में प्रयोग में लेने के लिए प्रशासनिक शब्दावली तैयार करनी चाहिये। प्रो. समणी ऋतु प्रज्ञा ने प्राकृत के विभिन्न आयामों को उद्धारित किया। विभाग की शोधार्थी मनीषा जैन, अभिषेक चारण, डॉ. विकास शर्मा, डॉ. समणी विनय प्रज्ञा, आदि ने अनेक विषयों पर शोध आलेख प्रस्तुत किये।

संस्कृत भाषा के विकास से संस्कृति का उत्थान संभव : कुलपति

आज सम्पूर्ण विश्व में लगभग 1200 भाषाएं प्रचलित हैं, लेकिन इन सब भाषाओं की जननी संस्कृत भाषा को ही माना जाता है। यदि हमें भारतीय संस्कृति का विकास करना है तो संस्कृत भाषा का विकास करना ही होगा। उक्त विचार संस्थान के प्राच्यविद्या एवं भाषा विभाग की ओर से 22 अगस्त, 2016 को आयोजित संस्कृत दिवस समारोह अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने व्यक्त किये। उन्होंने संस्कृत भाषा के उत्थान के लिए इसके विकास पर बल दिया। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि तापड़िया संस्कृत महाविद्यालय, जसवन्तगढ़ के प्राचार्य डॉ. हेमन्त मिश्रा ने संस्कृत के प्रचार-प्रसार हेतु कार्य कर रही अनेक संस्थाओं का उल्लेख करते हुए जैन विश्वभारती संस्थान द्वारा प्राच्यविद्या और भाषा के क्षेत्र में दिये गये योगदान का महत्त्व प्रतिपादित किया। समारोह के मुख्य अतिथि अजमेर से पधारे डॉ. राकेश कुमार शर्मा ने भी संस्कृत को भारतीय संस्कृत का मूल बताते हुए उसके विकास पर बल दिया।

प्रो. दामोदर शास्त्री ने संस्कृत दिवस के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए वर्तमान में उसकी प्रासंगिकता के बारे में बताया। विभागाध्यक्ष डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा ने संस्कृत को आम बोल-चाल की भाषा बनाने पर जोर देते हुए उसे 'देववाणी' के साथ-साथ जनवाणी के नाम से अभिहित किया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुमुक्षु बहनों के मंगलाचरण से हुआ। अतिथियों को शॉल एवं साहित्य भेंट किया गया डॉ. समणी भास्कर प्रज्ञा द्वारा स्वागत भाषण दिया गया। कार्यक्रम में तन्मय जैन द्वारा संस्कृत गीत तथा विभाग की मुमुक्षु बहनों द्वारा एक संस्कृत लघु नाटिका प्रस्तुत की गई। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने किया तथा कार्यक्रम का संचालन मुमुक्षु धरती एवं मुमुक्षु रौनक ने किया।

पंजाबी विश्वविद्यालय में आयोजित संगोष्ठी में समणीद्वय की सहभागिता

पंजाबी विश्वविद्यालय के धर्म विभाग के अन्तर्गत पटियाला, में 29-30 नवम्बर को "जैन साधना पद्धति और प्रेक्षाध्यान" विषय पर दो दिवसीय संगोष्ठी डॉ प्रद्युम्न सिंह शाह के द्वारा आयोजित हुई। "प्राच्य विद्या एवं भाषा" विभाग की विभागाध्यक्ष और उद्घाटन सत्र में प्रमुख वक्ता के रूप में निमंत्रित डॉ समणी संगीतप्रज्ञा का "प्रेक्षाध्यान : एक परिचय' विषय पर PowerPoint Presentation से प्रभावी और रूचिकर व्याख्यान हुआ। समणी सुलभप्रज्ञा के द्वारा "Effect of Preksha Meditation on creative problem solving abilities" विषय पर पत्र वाचन हुआ। उपस्थित श्रोताओं के निवेदन पर प्रेक्षाध्यान का प्रायोगिक सत्र भी आयोजित किया गया तथा प्रेक्षाध्यान, जैन ध्यान - साधना के इतिहास पर भी लोगों ने जिज्ञासाएं व्यक्त की, जिनका समाधान किया गया। इस संगोष्ठी के माध्यम से जैनध्यान पद्धति और विशेष रूप से प्रेक्षाध्यान का प्रभाव पड़ा। समागत दिग्गज विद्वान जैसे प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र, डॉ गुरमेल, धर्म विभागाध्यक्ष, पंजाबी विश्वविद्यालय, प्रो. अग्निहोत्री, कुलपति हिमाचल विश्वविद्यालय इत्यादि ने कहा कि उन्होंने पहली बार प्रेक्षाध्यान की सम्यक् जानकारी प्राप्त की।

प्राच्य विद्या के अध्ययन से ही मूल्यों को समझना आसान : डॉ संगीत प्रज्ञा

संस्थान के प्राच्य विद्या एवं भाषा विभाग के तत्वावधान में नवागन्तुक विद्यार्थियों के स्वागत समारोह का आयोजन 13 अगस्त, 2016 को विभागाध्यक्ष डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय के सेमीनार हॉल में रखा गया। विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा ने कहा कि प्राच्य विद्या का ज्ञान होना प्रत्येक व्यक्ति के लिए जरूरी है। वर्तमान दौर में प्राच्य भाषा के अध्ययन से ही मूल्यों की शिक्षा को समझा जा सकता है। इस अवसर पर समणी भास्कर प्रज्ञा, मुमुक्षु नम्रता, मुमुक्षु शालू, रौनक आदि द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी गई। कार्यक्रम का संचालन करते हुए शोध छात्रा मनीषा जैन ने विश्वविद्यालय एवं विभाग का परिचय दिया।

प्राकृत-संस्कृत प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित

संस्थान के प्राच्यविद्या एवं भाषा विभाग द्वारा आयोजित त्रैमासिक प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम एवं प्राकृत एवं संस्कृत विषयक कार्यशाला लाडनूं में आयोजित की गयी। उक्त कार्यशाला में संस्कृत, प्राकृत, व्याकरण, दर्शन साहित्य के साथ-साथ दैनिक बोल-चाल में उच्चारण शुद्धि पर बल दिया गया। इस अवसर पर विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा ने सभी प्रतिभागियों के प्रति आभार व्यक्त करते हुये कहा कि प्राच्य भाषा के अध्ययन-अध्यापन की आज जरूरत है। हमें इसमें समाहित नैतिक तत्त्व, संस्कृति और सांस्कृतिक संरक्षण का ज्ञान हमारे राष्ट्र, समाज और परिवार उत्थान के लिए आवश्यक है। समणी नियोजिका प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा ने कहा कि निरन्तर 'संस्कृत प्राकृत भाषा' का प्रयोग करते रहें और शोध कार्य करें। कार्यशाला को डॉ. समणी हिम प्रज्ञा, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने भी संबोधित किया।

प्रतिभागी के रूप में डॉ. मंजु नाहटा, विकास गर्ग, हेमलता, वीरबाला छाजेड़, पुखराज सेठिया, विमला डागलिया, पूर्णिमा चौरड़िया, मंजू बैद आदि ने विचार व्यक्त किये। पुष्पा बैद द्वारा संस्कृत में नाटक प्रस्तुत किया गया। यह कार्यशाला संयोजिका कुमुद कच्छारा एवं मोहिनी देवी चोरड़िया मुम्बई द्वारा अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल के सहयोग से आयोजित की गई। अन्त में डॉ. मंजु नाहटा ने समणी वर्ग व विश्वविद्यालय के प्रति आभार व्यक्त किया।

राष्ट्रीय कार्यशाला

''शास्त्रवार्तासमुच्चय''ग्रंथ पर दस दिवसीय जैन न्याय विषयक राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के आर्थिक सौजन्य से जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं द्वारा आयोजित दस दिवसीय जैन न्याय विषयक ग्रन्थ ''शास्त्रवार्तासमुच्चय''पर आधारित राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन दिनांक 11-20 नवम्बर, 2016 को किया गया। इस कार्यशाला में देश के विविध राज्यों से 21 प्रतिभागी तथा राजस्थान से विशेषत: जैन विश्वभारती संस्थान के जैनविद्या विभाग, प्राच्य-विद्या एवं भाषा विभाग, अहिंसा एवं शांति विभाग, योग एवं जीवन विज्ञान विभाग से 29 प्रतिभागियों ने सहभागिता की। बाहर से आने वाले प्रतिभागियों में महाराष्ट्र से 3, गुजरात से 2, उत्तरप्रदेश से 7, राजस्थान (भरतपुर)से 2, मध्यप्रदेश से 1, दिल्ली से 2, बिहार से 3, बंगाल से 1 प्रतिभागी ने भाग लिया। इस प्रकार कुल 50 प्रतिभागियों ने इस कार्यशाला में सहभागिता की। सभी प्रतिभागी दसों दिन अध्ययन एवं चर्चा-परिचर्चा में संलग्न रहे।

प्रतिदिन तीन सत्रों के माध्यम से कक्षाओं एवं चर्चा का संचालन किया गया। सभी सत्रों में प्रतिभागियों का उत्साह प्रशंसनीय रहा। विषय के अध्यापन हेतु जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय से प्रो. धर्मचन्द जैन, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, जयपुर परिषद से प्रो. श्रेयांश कुमार सिंघई, लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली से प्रो. वीरसागर जैन, जैन विश्वभारती संस्थान के प्राच्यविद्या एवं भाषा विभाग से प्रो. दामोदर शास्त्री, दूरस्थ शिक्षा विभाग से प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी एवं जैनविद्या विभाग से प्रो. समणी चैतन्यप्रज्ञा तथा योगेश कुमार जैन का सहयोग प्राप्त हुआ।

समन्वय की अद्भुत शैली का उपयोग - कार्यक्रम के प्रारंभ में उद्घाटन सत्र में जैन विश्वभारती संस्थान के कुलपति प्रो. बी. आर. दूगड़जी के दिशा निर्देशानुसार कार्यशाला को सार्थक बनाने हेतु चर्चा सत्रों पर विशेष बल दिया गया। चर्चा सत्रों के दौरान एवं समागत प्रतिभागियों से प्राप्त प्रतिवेदन के अनुसार अध्यापक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी जैन न्याय विद्या को जानने-समझने तथा पढ़ने के लिए प्रतिबद्ध हैं परन्तु उन्हें एक स्थायी मंच अथवा माहौल की आवश्यकता थी, जिसे भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के सौजन्य से जैन विश्वभारती संस्थान ने पूर्ण की। समागत विषय-विशेषज्ञों का कहना था कि''वे ICPR एवं JVBI दोनों के प्रति आभारी हैं। क्योंकि वर्षों बाद एक ऐसे ग्रन्थ के स्वाध्याय का अवसर हमें प्राप्त हुआ जिसमें समन्वयवादी विचारधारा के दर्शन होते हैं।'' सभी जैन एवं जैनेतर न्यायविद आचार्यों ने स्वमतमण्डन तथा परमतखण्डन की मुख्यतापरक ग्रंथ लिखे हैं, परन्तु आचार्य हरिभद्र ने ''शास्त्रवार्तासमुच्चय''में स्वमत स्थापन के साथ परमत समन्वय की जिस शैली को अपनाया है, वह अद्भुत है। उन्होंने समस्त भारतीय दर्शनों का समावेश कर उनके मतों को पूर्वपक्ष के रूप में प्रस्तुत कर उसका तर्कपुरस्सर खंडन किया और अन्त में अनेकान्त दृष्टि से अनेक समन्वय की संभावना को भी स्पष्ट किया। उन्होंने समन्वय हेतु जिस सभ्यता, सहजता एवं सहअस्तित्व की भावना का परिचय दिया वह अनुकरणीय है। आचार्य हरिभद्र जैनेतर मतों के सिद्धान्तों को सापेक्षरूप में स्वीकार करने में सहज प्रतीत होते हैं। यही कारण है कि उन्हें समन्वयवादी आचार्य कहा जाता है।

अनवरत चले ऐसी कार्यशालाओं का क्रम - जैन न्याय विषयक संस्कृत भाषा में लिखे गए मूलभूत दार्शनिक ग्रंथ पर यह प्रथम कार्यशाला थी जो जैन विश्वभारती संस्थान में आयोजित हुई। इस कार्यशाला के आयोजन से विभाग के सभी शिक्षकों और प्रतिभागियों को विषय के प्रति गंभीर जानकारियां प्राप्त हुई। प्रतिभागियों से प्राप्त प्रतिवेदन के अनुसार यह क्रम अनवरत चलना चाहिए। एम.ए. करने के बाद यदि कोई विद्यार्थी दर्शन की किसी विशेष विधा में विशेषज्ञता प्राप्त करना चाहें तो उसके लिए इस प्रकार की कार्यशालाओं का आयोजन अत्यन्त लाभकारी सिद्ध हो सकता है। कार्यशाला में निर्धारित ग्रन्थ का आद्योपान्त अध्ययन तो होता ही है, साथ ही विषय से सम्बद्ध अन्यान्य दार्शनिक मतों एवं मान्यताओं पर भी चर्चा होती है, जिससे एकपक्षीय ज्ञान का निराकरण होता है और चिन्तन अनैकान्तिक/बहुआयामी बनता है।

इस कार्यशाला के माध्यम से चार्वाक, बौद्ध, सांख्य, न्याय-वैशेषिक, योग, मीमांसा एवं वेदान्त दर्शनों के अनेकानेक सिद्धान्तों की जैनदृष्टि से समीक्षा को पढ़ने का अवसर प्रतिभागियों को प्राप्त हुआ। इससे न केवल जैनदृष्टि को समझने का अवसर प्राप्त हुआ अपितु अन्य भारतीय दर्शनों और उनके आधारभूत दार्शनिक वाङ्मय को जानने का भी सुअवसर प्राप्त हुआ। ICPR के सहयोग से विभाग एवं प्रतिभागियों का यही अनुरोध है कि कार्यशाला की यह श्रृंखला अनवरत चलनी चाहिए जिससे जो शोधार्थी एवं विद्यार्थी जैन दर्शन एवं अन्य भारतीय दर्शन के क्षेत्र में विशेषज्ञता प्राप्त करना चाहते हैं उन्हें वह अवसर प्राप्त होता रहे। जैन विश्वभारती संस्थान का जैन विद्या विभाग पुन: पुन: ऐसी कार्यशालाओं के आयोजन हेतु प्रतिबद्ध है। भविष्य में प्रमाण-मीमांसा, परीक्षामुख, तर्कभाषा आदि पर आधारित कार्यशाला की स्वीकृति यदि ICPR देता है, तो प्रतिभागियों की रूचि एवं प्राप्त ज्ञान में अनवरत वृद्धि होती रहेगी। वर्तमान में दार्शनिक विषयों के विशेषज्ञों की कमी सहज परिलक्षित हो रही है तथा जो विद्वान शेष हैं वे भी मानसिक रूप से पूर्ण स्वस्थ हैं- किन्तु शारीरिक रूप से यत्र-तत्र जाने में अक्षमता व्यक्त करते हैं अत: यह प्राचीन ज्ञान-विज्ञान धीरे-धीरे उपेक्षित होता जा रहा है और भविष्य में लुप्त भी हो सकता है। इस प्रकार की कार्यशालाओं का आयोजन ही इस प्रकार की ज्ञाननिधि को सुरक्षित रखने में बड़ी भूमिका निभा सकता है।

जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय में स्मार्ट क्लासेज का प्रारम्भ- कुलपति

क्षेत्रीय नागरिकों के साथ संगोष्ठी में विश्वविद्यालय के विकास पर विचार

संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा है कि इस विश्वविद्यालय में दिसम्बर माह से स्मार्ट क्लासेज का प्रारम्भ किया जा रहा है। प्रारम्भ में ऐसी करीब एक दर्जन कक्षायें होंगी, जिनमें कम्प्यूटर के जरिये पढ़ाई करवाई जायेगी। वे यहां विश्वविद्यालय में स्थित कुलपति सेमीनार हॉल में 23 दिसम्बर, 2016 को आयोजित क्षेत्र के प्रमुख व्यक्तियों की संगोष्ठी को सम्बोधित कर रहे थे। प्रो. दूगड़ ने छोटे-छोटे कोर्सेज के माध्यम से कम अंक लाने वाले विद्यार्थियों को अपने अंक बढ़ाने का माध्यम भी प्रदान करने की घोषणा की। उन्होंने बताया कि कम्प्यूटर कोचिंग के लिये तीन कोर्स लघु अवधि के अगले महिने से शुरू किये जा रहे हैं। हम यहां एक ऐसा स्टूडियो विकसित करने जा रहे हैं, जिसमें डिजीटाईजेशन का काम होगा। इसमें सभी विषयों के लेक्चरों को अपलोड किया जायेगा तथा ऐसे तैयार लैक्चरों को अन्य विश्वविद्यालयों को प्रोवाइड किया जायेगा।

लाईब्रेरी को एनसाईक्लोपीडिया से किया जायेगा सम्पन्न - उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय की विशाल लायब्रेरी का भी डिजीटलाईजेशन किये जाने की योजना पर काम हो रहा है। इसके अलावा लाईब्रेरी के लिये 400 एनसाईक्लोपीडिया भी खरीदे जा रहे हैं, जो विश्व स्तर की हर प्रकार की जानकारी के लिये उपयोगी होंगे तथा शोधकार्यों में उनका प्रयोग हो सकेगा। इसके बाद यह लाईब्रेरी अद्वितीय हो जायेगी। प्रो. दूगड़ ने आयुर्वेद, हौमियोपैथिक व नैचुरोपैथिक चिकित्सा पद्धतियों के शिक्षण के लिये मेडिकल कॉलेज खोले जाने की इस क्षेत्र में आवश्यकता बताई। उन्होंनें कहा कि इसके लिये कार्य-योजना कर प्राथमिकता से काम किया जायेगा। उन्होंने पर्सनैलिटी डेवलपमेंट, लीडरशिप डवलपमेंट, खेलकूद व अन्य सह-शैक्षणिक गतिविधियों को बढ़ावा देने की योजनाओं की जानकारी भी दी। उन्होंने कहा कि क्षेत्र के नागरिकगण विश्वविद्यालय के विकास के बारे में सुझाव देंगे, तो उन पर अमल किया जायेगा।

विद्यार्थियों की क्षमता बढाने के प्रयास- इस संगोष्ठी में जैन विश्व भारती के अध्यक्ष रमेश चंद बोहरा ने विश्वविद्यालय के विकास के लिये कामना व्यक्त की। विश्वविद्यालय के कुलपति विनोद कुमार कक्कड़ ने कैरियर कॉंसलिंग, पर्सनैलिटी डेवलपमेंट, इंटरव्यू की तैयारी, इंगलिश स्पोकन कोर्स, शोर्ट टर्म एडवांस कम्प्यूटर कोर्स, म्यूजिक कोर्स, हॉबीज के कोर्सेज आदि क्षमता बढाने एवं सर्वांगीण विकास के कार्यक्रम संचालित किये जा रहे हैं। दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने प्रारम्भ में सभी नागरिकों का स्वागत करते हुये उन्हें विश्वविद्यालय की जानकारी दी कि पूरे कैम्पस के वाई-फाई होने, छात्रावास की पृथक-पृथक व्यवस्था, लाईब्रेरी, बीएससी-बीएड व बीए-बीएड के चार वर्षीय कार्यक्रमों, विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास के लिये संचालित विभिन्न गतिविधियों आदि की जानकारी दी। डॉ वीरेन्द्र भाटी ने अतिथियों का परिचय दिया।

इन्होंने भी रखे विचार- संगोष्ठी में नगर पालिका के उपाध्यक्ष भाणू खां टाक, एडवोकेट ओमप्रकाश प्रजापत, देवाराम पटेल, पार्षद विजय कुमार भोजक, ललित वर्मा, रामनिवास शर्मा, चांद कपूर सेठी, लक्ष्मीपत बैंगानी, भाजपा के जिला मंत्री नितेश माथुर सीए, खींवाराम धिंटाला, किरण बरमेचा, रामनारायण सोनी, शहर काजी सैयद मो. अयूब अशरफी आदि ने अपने विचार व्यक्तकरते हुये अनेक सुझाव प्रस्तुत किये। संगोष्ठी में वित्ताधिकारी आरके जैन, उप कुल सचिव नेपाल चंद गंग, भाजपा शहर अध्यक्ष हनुमानमल जांगिड़, जिला स्तरीय सतर्कता एवं निगरानी समिति की सदस्य सुमित्रा आर्य, नगर पालिका के पूर्व उपाध्यक्ष याकूब शेख, सुशील पीपलवा, राजेश खटेड़, अनिल पहाडिया, जौहरीमल दूगड़, शांतिलाल बैद, भारत विकास परिषद के अध्यक्ष रमेश सिंह राठौड़, चौथमल किल्ला, प्रधान प्रतिनिधि प्रताप सिंह कोयल, निम्बी जोधां के सरपंच श्याम सुन्दर पंवार, तेज सिंह जोधा, सुनीता बैद आदि उपस्थित थे।

राष्ट्रीय संगोष्ठी

शिक्षा में भारतीय मूल्यों का समावेश जरूरी : प्रो. दूगड़

संस्थान के शिक्षा विभाग के अन्तर्गत ''मुख्य शैक्षिक एवं सामाजिक समस्याएँ : निदान एवं उपचार'' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 28 एवं 29 अगस्त को किया गया। संगोष्ठी के विविध सत्रों में लैंगिक असमानता, अध्यापक शिक्षा में गुणवत्ता, समावेशी शिक्षा, सांस्कृतिक प्रदूषण एवं विभिन्न सामाजिक समस्याओं से सम्बन्धित पत्रों का प्रस्तुतीकरण किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने यूनेस्को एवं विविध भारतीय एजेन्सियों के शैक्षिक क्षेत्र में दिये गये सूत्रों का हवाला देते हुए कहा कि भारतीय संस्कृति के उदात्त मूल्य, संपूर्ण विश्व के समक्ष समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करते हैं। वर्तमान परिदृश्य में आवश्यकता है कि सभी अध्यापक शिक्षक, शिक्षा में भारतीय मूल्यों की पुनर्स्थापना हेतु कटिबद्ध हों। शिक्षा में भारतीय मूल्यों का समावेश जरूरी है।

शिक्षा के माध्यम से समस्याओं का समाधान करें

मुख्य अतिथि प्रो. श्रीधर वशिष्ठ ने शिक्षा एवं समाज के परस्पर सम्बन्धों एवं सम्बन्धित समस्याओं पर विचार व्यक्त करते हुए कहा कि वर्तमान युग की आवश्यकता है कि भारतीय शिक्षा के सांस्कृतिक पक्षों को अपनाकर हम भारतीय समाज को नवीन दिशा प्रदान कर सकते हैं। लैंगिक विषमता, बालश्रम, नारी अशिक्षा, जातिगत व आर्थिक भेदभाव जैसी समस्याओं का समाधान अध्यापक शिक्षा के माध्यम से करने की दिशा में कार्य करना चाहिये।

सेमीनार के सत्रों में विविध राज्यों से पधारे प्रतिभागी एवं विषय विशेषज्ञों ने शैक्षिक एवं सामाजिक समस्याओं पर विचार मंथन किया, जिनमें प्रो. जे.पी.एन. मिश्रा, प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, प्रो. आशतोष प्रधान, प्रो. विजयलक्ष्मी शर्मा, डॉ. शकुन्तला शर्मा, प्रो. श्रीधर वशिष्ठ, प्रो. दामोदर शास्त्री, विनोद कुमार कक्कड़, कानपुर से डॉ. शिवनारायण, गुड़गांव से डॉ. युधिष्ठिर, उत्तराखण्ड से एन. बी. सिंह, डॉ. दोबाकी सिरोला, फरीदाबाद से वरूण शर्मा, विलासपुर से डॉ. अनिता रानी, डॉ. शिवदयाल, रविन्द्र मारू, मौसम पारीक, विनोद जैन, उर्मिला शर्मा, डॉ. सुरभि शर्मा आदि प्रमुख रहे।

समारोह के समापन के अवसर पर दो दिवसीय सेमीनार के दौरान प्रस्तुत पत्रों का सार प्रस्तुत करते हुए डॉ. सरोज राय ने बताया कि शिक्षा केवल आजीविका का साधन होना, गुरू शिष्य के मध्य स्तर असमानता, प्रजातांत्रिक एवं चारित्रिक मूल्य पतन, बढ़ती आर्थिक व सामाजिक असमानता, विशिष्ट बालकों का मुख्य धारा से विलग होना वर्तमान शैक्षिक व सामाजिक परिवेश की व्यापक समस्याएं है। इन सभी समस्याओं के समाधान हेतु समस्त अध्यापक शिक्षकों, समाज सेवकों एवं प्रशासकों को सम्मिलित प्रयास करने की आवश्यकता है। संगोष्ठी में कुल 125 प्रतिभागियों ने पत्र वाचन किया।

सांस्कृतिक एवं साहित्यिक प्रतियोगिताएँ

संस्थान के शिक्षा विभाग में 7 एवं 8 दिसम्बर, 2016 को दो दिवसीय सामूहिक क्रियात्मक विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत सांस्कृतिक एवं साहित्यिक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सामूहिक लोकनृत्य एवं फिल्मी नृत्य, वाद-विवाद, डम्बशिराज, अनुपयोगी सामग्री का उपयोग, लोक एवं फिल्मी गीत, नाटक, मेहंदी, रंगोली प्रतियोगिताएं आयोजित की गयी। निर्णायक के रूप में डॉ श्वेता जैन, सुश्री अंकिता जांगीड व नरेन्द्र कुमार सैनी, डॉ सरोज रॉय, डॉ अमिता जैन व श्रीमती नुपुर जैन, डॉ पुष्पा मिश्रा, डॉ विवेक माहेश्वरी, पूजा जैन ने अपना योगदान दिया। कार्यक्रम के समापन सत्र में जैन विश्वभारती संस्थान के कुलसचिव विनोद कुमार कक्कड ने अपने उद्बोधन में छात्राओं की प्रस्तुतियों को सराहनीय प्रयास बताते हुए कहा कि विद्यार्थियों को निरन्तर अपनी प्रतिभाओं को समयानुसार आगे लाने का प्रयास करना चाहिए। उसके लिये प्रयत्न करते रहना चाहिए। अंत में शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो बनवारीलाल जैन ने छात्राओं की प्रतिभाओं को उनके लक्ष्य तक पहुंचाने के लिए प्रोत्साहित किया। मंच संचालन एम.एड. छात्रा पूजा वशिष्ठ एवं रागिनी शर्मा एवं मोनिका सिंह ने किया।

जीवन विज्ञान दिवस का आयोजन

संस्थान के शिक्षा विभाग में 12 नवम्बर, 2016 को जीवन विज्ञान दिवस का आयोजन किया गया। विभागाध्यक्ष, प्रो. बी. एल. जैन ने जीवन विज्ञान को अन्तश्चेतना का विषय बताया और कहा कि जीवन विज्ञान रोगों से निजात दिलाता है। डॉ. अमिता जैन ने जीवन विज्ञान के औचित्य को बताया। डॉ. गिरिराज भोजक ने आचार्य श्री महाप्रज्ञ के प्रेक्षाध्यान, योग एवं जीवन विज्ञान को सदैव जीवन में अपनाने पर बल दिया। डॉ. आभासिंह ने जीवन विज्ञान को व्यवस्थित ढंग से जीने की कला बताया। इस मौके पर सभी संकाय सदस्य उपस्थित रहे।

विजयादशमी पर्व मनाया

संस्थान के शिक्षा विभाग में 10 अक्टूबर, 2016 को विजयादशमी पर्व का आयोजन समारोह पूर्वक किया गया। इस अवसर पर संस्थान के डॉ. मनीष भटनागर, डॉ बी प्रधान, डॉ विष्णु कुमार, डॉ सरोज राय ने दशहरा पर्व हमें अवगुणों के रावण का नाश करके हमें राम बनने की कोशिश करने की प्रेरणा देता है। छात्राध्यापिकाओं में प्रीति स्वामी व अदिति कंवर ने भी विचार व्यक्त किये। संचालन डॉ. अमिता जैन ने किया।

प्रसार व्याख्यान माला

राष्ट्र निर्माण में शिक्षक की अहम् भूमिका : प्रो. वशिष्ठ

संस्थान के शिक्षा विभाग के तत्वावधान में 30 अगस्त, 2016 को प्रसार व्याख्यान माला के अन्तर्गत आयोजित व्याख्यान में लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत शिक्षा संस्थान, नई दिल्ली पूर्व कुलपति प्रो. श्रीधर वशिष्ठ ने सामाजिक, शैक्षिक, राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक परिदृश्य से जुड़ी समस्याओं के विविध कारणों एवं समाधानों पर प्रकाश डाला। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में व्याप्त दोषों के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि आजकल शिक्षा को केवल रोजगार प्राप्ति का साधन माना जाता है। शिक्षा सेवा के स्थान पर व्यवसाय बनती जा रही है। जिससे अनेक समस्याएं उत्पन्न हो रही है। शिक्षक राष्ट्र निर्माण की महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है अतः उसका चरित्र आदर्श, प्रेरक एवं मार्गदर्शन प्रदान करने वाला होना चाहिये।

भारतीय संस्कृति में निहित मूल्यों एवं उदात्त परम्पराओं को आत्मसात करने की प्रेरणा देते हुए उन्होंने कहा कि धैर्य, क्षमा, अहिंसा, सर्वधर्म समभाव, परोपकार आदि को अपनाकर वर्तमान समाज को आज भी नई दिशा प्रदान की जा सकती है। विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने आभार ज्ञापित किया।

खेल-कूद प्रतियोगिताएँ आयोजित

संस्थान के शिक्षा विभाग के अन्तर्गत शारीरिक गतिविधियों तथा खेलकूद कार्यकम का आयोजन 10 से 13 दिसम्बर 2016 तक किया गया। उद्घाटन सत्र में शिक्षा विभाग विभागाध्यक्ष प्रो बनवारीलाल जैन ने छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि छात्राध्यापिकाओं को प्रशिक्षण के दौरान गतिविधियों में भाग लेने से आंतरिक क्षमताओं का प्रदर्शन करने का अच्छा अवसर मिलता है।

म्यूजिकल चैयर में प्रथम सुमन नैण बीएड, द्वितीय अनिता कुमावत बीए-बीएड, तृतीय सुमन पूनियां बीएड रही। 100 मीटर दौड में प्रथम अनिल बीए-बीएड, द्वितीय सुमन पूनियां बीएड व तृतीय पुष्पा सिन्ध बी.एड. रही। खो-खो प्रतियोगिता की प्रथम विजेता टीम पूर्णिमा चौधरी एवं द्वितीय स्थान पर सरिता राहड़ की टीम रही। कबड्डी प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर विनोद बिडियासर की टीम, द्वितीय स्थान पर सुमन नैण की टीम एवं तृतीय स्थान पर मंजू की टीम रही। खेल-कूद प्रभारी डॉ सरोज राय ने समस्त छात्राध्यापिकाओं तथा संकाय सदस्यों का आभार प्रस्तुत किया।

संविधान दिवस का आयोजन

संस्थान के शिक्षा विभाग के अन्तर्गत 26 नवम्बर 2016 को संविधान दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में राष्ट्रीय मूल कर्तव्यों के संबंध में विचार व्यक्त करते हुए डॉ. अदिति गौतम ने कहा कि हमें अपने सामाजिक, पारिवारिक एवं राष्ट्रीय कर्तव्यों के प्रति आस्था रखनी चाहिए। विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने सभी एम.एड. एवं बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों को संवैधानिक अधिकारों तथा कर्तव्यों के प्रति जागरूक रहने का आह्वान किया। उन्होंने शिक्षिका के तौर पर बी.एड. छात्राध्यापिकाओं को संविधान को पढ़ने, प्रचारित करने एवं राष्ट्रवाद के प्रति अपने मुख्य दायित्वों को निष्ठापूर्वक निभाने हेतु प्रेरित किया। डॉ. अमिता जैन ने संविधान की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं डॉ. भीमराव अम्बेडकर के मुख्य योगदान पर प्रकाश डाला। डॉ. गिरिराज भोजक ने कहा कि आदर्श नागरिक निर्माण हेतु शिक्षकों को सदैव तत्पर रहना चाहिए। विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने संविधान दिवस के अवसर पर निर्धारित शपथ दिलवाते हुए छात्राध्यापिकाओं को संविधान और देश की अखण्डता के प्रति सदैव प्रयासरत रहने का आह्वान किया।

गणेश चतुर्थी एवं शिक्षक दिवस मनाया

5 सितम्बर 2016 को संस्थान के शिक्षा विभाग में शिक्षक दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ बी. एड. छात्राध्यापिकाओं द्वारा मंगलाचरण एवं अतिथियों द्वारा माँ सरस्वती को माल्यार्पण के साथ हुआ। विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने समस्त छात्राध्यापिकाओं को कुशलता सम्पन्न शिक्षक बनने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम के अन्तर्गत एम. एड. एवं बी. एड. छात्राओं विमला ठोलिया, गीतान्जली, खुशबू योगी, गुंजन चौधरी, अंकिता, अदीति कंवर, प्रभा पिलानियां, धर्मेशिखा, पुष्पा घोटिया द्वारा प्रेरक प्रसंग, गीत नृत्य एवं कविता की प्रस्तुतियाँ दी गई। कार्यक्रम का संचालन सुमन महला ने किया। इस अवसर पर अहिंसा एवं शांति विभाग द्वारा शिक्षक दिवस का आयोजन विश्वविद्यालय के सेमीनार हॉल में समारोह पूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम में प्रो अनिलधर, डॉ रविन्द्र सिंह, डॉ विकास शर्मा सहित अनेक लोगों ने अपने विचार रखे।

अभिव्यक्ति कौशल कार्यशाला

संस्थान के शिक्षा विभाग के अन्तर्गत अध्ययनरत छात्राध्यापिकाओं हेतु एक दिवसीय ''अभिव्यक्ति कौशल'' कार्यशाला का आयोजन किया गया।

अभिव्यक्ति कौशल के प्रमुख घटकों पर प्रकाश डालते हुए विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने कहा कि अभिव्यक्ति कौशल कार्यशाला का उद्देश्य बी.एड. छात्राध्यापिकाओं में संप्रेषण एवं अभिव्यक्ति सम्बन्धी लेखन, वाचन एवं श्रवण सम्बन्धी विविध योग्यताओं का विकास करना है। कार्यशाला में विविध विषयों पर छात्राध्यापिकाओं द्वारा लिखित सामग्री तैयार की गई तथा विषय सम्बन्धी विचारों की मौखिक अभिव्यक्ति का मूल्यांकन किया गया। कार्यक्रम में समस्त संकाय सदस्यों सहित सभी बी.एड. छात्राध्यापिकाओं ने भाग लिया।

उच्च स्तरीय शोध को बढ़ावा देने के लिये दस लाख तक आर्थिक सहायता

विभिन्न क्षेत्रों में उच्च स्तरीय शोध कार्य को प्रोत्साहन देने के लिये संस्थान विशेष सहायता प्रदान करने का कार्य कर रहा है। इसके लिये शिक्षकों को उनके अभिनव शोध कार्य के लिये वितीय सहायता प्रदान की जाने की व्यवस्था की गई है। कुलपति प्रो बच्छराज दूगड ने बताया कि ऐसे नवाचारी शोध प्रोजेक्ट के लिये कार्यरत शिक्षक, सेवानिवृत्त प्रोफेसर्स, प्रसिद्ध स्कॉलर्स, युवा शोधार्थी, विद्वान अध्येता आदि इस विश्वविद्यालय में अपने प्रोजेक्ट संस्थान के विज्ञापन के पश्चात् आवेदन कर सकते हैं। प्रस्तावित प्रोजेक्ट के विषय, विषयवस्तु एवं गुणवत्ता के सम्बंध में विशेषज्ञों की एक कमेटी निर्णय करेगी तथा उसमें आवश्यक संशोधन किये जाने के लिये निर्देशित भी किया जा सकेगा। उन्होंने बताया कि इसके लिये शोध कार्य की तीन श्रेणियां निर्धारित की गई है। पायलट प्रोजेक्ट के लिये 50 हजार, माइनर रिसर्च प्रोजेक्ट के लिये 2 लाख और मेजर रिसर्च प्रोजेक्ट के लिये 10 लाख रूपये का वितीय सहयोग उपलब्ध करवाया जाएगा।

इस सम्बंध में विश्वविद्यालय में कुलपति प्रो बच्छराज दूगड की अध्यक्षता में एक बैठक का आयोजन कर गाइड लाईन तय की गई। इस बैठक में प्रो एमआर गेलडा, प्रो नरेश दाधीच, प्रो के.एन. व्यास, प्रो के.एस. सक्सेना, प्रो आशुतोष प्रधान, प्रो आरबीएस वर्मा, प्रो आनन्द प्रकाश त्रिपाठी व प्रो अनिल धर शामिल हुये। बैठक में तय किया गया कि विश्वविद्यालय की इस परियोजना के लिये इच्छुक शोधकर्ता अपना प्रोजेक्ट स्वयं अथवा किसी संस्थान, पंजीकृत संगठन, एजेंसी के माध्यम से प्रस्तुत करके इस योजना में शामिल हो सकते हैं। किसी भी प्रोजेक्ट को स्वीकृत करने का अंतिम निर्णय कुलपति के अधीन रहेगा। इस योजना का उद्देश्य संस्थान में अनवरत उच्च स्तरीय शोध को बढ़ावा देना है।

एंटी रैगिंग सेल जागरूकता कार्यक्रम

संस्थान के शिक्षा विभाग एवं आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं को 20 अक्टूबर, 2016 को एंटी रैगिंग सेल की कार्य प्रणाली, उद्देश्य एवं नियमावली से अवगत करवाया गया।

विभागाध्यक्ष एवं सदस्य एण्टी रैगिंग स्क्वाड प्रो. बी. एल. जैन ने छात्राध्यापिकाओं को अपने प्रमुख अधिकारों के प्रति जागरूकता हेतु प्रेरणा देते हुए एण्टी रैगिंग सेल के प्रमुख पदाधिकारियों एवं संगठन की संक्षिप्त जानकारी प्रदान की। संस्थान के कुलसचिव एवं संयोजक, एंटी रैगिंग स्क्वाड विनोद कुमार कक्कड़ ने एण्टी रैगिंग से सम्बन्धित प्रमुख शब्दावली, उपबंधों, दण्ड नियमावली की जानकारी से सभी छात्राध्यापिकाओं को अवगत कराया। विभागाध्यक्ष प्रो. बी. एल. जैन ने आभार ज्ञापित किया।

एकता दौड़ का आयोजन

संस्थान द्वारा राष्ट्रीय एकता दिवस के उपलक्ष्य में 28 नवम्बर, 2016 को एकता दौड़ का आयोजन शिक्षा विभाग द्वारा किया गया। इस मौके पर कुलपति महोदय ने हरी झण्डी दिखाकर एवं छात्राओं को अभिप्रेरित कर दौड़ का शुभारंभ करवाया। विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने बताया कि सरदार बल्लभ भाई पटेल ने भारत की रियासतों का एकीकरण किया और कहा कि हमें कठिन परिस्थितियों में भी एकता का परिचय देना चाहिए।

एकता दौड़ में प्रथम स्थान अनिता कुमावत, द्वितीय स्थान सुमन पूनियां व तृतीय स्थान पुष्पा सिद्ध ने प्राप्त किया। श्लोगन प्रतियोगिता में कौशल्या सैनी ने प्रथम स्थान, द्वितीय स्थान पूर्णिमा चौधरी व तृतीय स्थान भावना कंवर खंगारोत ने प्राप्त किया।

नि:शुल्क संचालित योग कक्षाओं से लोगों को स्वास्थ्य लाभ

विश्वविद्यालय द्वारा सामाजिक सरोकार कार्यक्रम के तहत शहरवासियों को निरोग एवं स्वस्थ बनाने के लिये पिछले विश्व योग दिवस से निरन्तर योगाभ्यास शिविर का आयोजन किया जा रहा है। विश्वविद्यालय के योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के सहायक आचार्य डॉ. अशोक भास्कर ने बताया कि लाडनूं शहर के लोगों के लिये विश्वविद्यालय की ओर से यह नि:शुल्क सेवा संचालित की जा रही है, जिसमें सुयोग्य व दक्ष योग विशेषज्ञों द्वारा आसन, प्राणायाम, ध्यान, यौगिक क्रियायें आदि करवाई जाती है। पिछले छह माह से इन योग कक्षाओं में काफी महिला-पुरूष एवं बच्चे भाग लेकर स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर रहे हैं। यहां पूर्व पार्षद एवं समाजसेवी ललित वर्मा, बालचर संघ के सीताराम टेलर, व्यापार मंडल के अध्यक्ष हनुमानमल जांगिड., सुशील पीपलवा आदि ने नियमित योगाभ्यास करके स्वास्थ्य लाभ प्राप्त किया है। उन्होंने अपने अनुभवों से बताया कि इन योग कक्षाओं से उन्हें अपना शारीरिक वजन कम करने, जोडों के दर्द, मधुमेह, आलस्य एवं अनिद्रा जैसी समस्याओं में लाभ पहुंचा है। डॉ भास्कर ने बताया कि जैन विश्वभारती स्थित महाप्रज्ञ इंटरनेशनल हॉल में प्रतिदिन सवेरे 6.30 बजे से 7.30 बजे तक एक घंटा नियमित योगाभ्यास करवाया जाता है।

प्रो. शास्त्री व डॉ. जैन को राष्ट्रपति सम्मान की घोषणा

जैन विश्वभारती संस्थान के संस्कृत प्राकृत भाषा विभाग के प्रो दामोदर शास्त्री एवं जैन विद्या विभाग के सहायक आचार्य डॉ योगेश कुमार जैन को राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी ने महर्षि बादरायण सम्मान देने की घोषणा की। भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार द्वारा प्रतिवर्ष प्राकृत व पाली भाषा क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए दिये दिया जाता है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो बच्छराज दूगड ने दोनों विद्वानों को बधाई देते हुए शुभकामनाएँ दी। ज्ञात रहे इस सम्मान के लिए कुलपति प्रो बच्छराज दूगड़ की अनुशंशा पर मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने राष्ट्रपति कार्यालय को दोनों विद्वानों की अनुषंषा भेजी थी। यह सम्मान देश के राष्ट्रपति द्वारा राष्ट्रपति भवन में आयोजित सम्मान समारोह में प्रदान किया जायेगा।

पीएचडी स्कॉलर्स के लिये छ:माही कोर्स-वर्क आयोजित

संस्थान के शोध विभाग के तत्वावधान में छह मासीय कोर्स वर्क का शुभारम्भ संस्थान के सेमिनार हॉल में 16 सितम्बर, 2016 को समारोह पूर्वक हुआ। शोध विभाग के निदेशक प्रो आरबीएस वर्मा ने स्वागत वक्तव्य देते हुए सभी उपस्थित शोध वर्क में शामिल स्कॉलर का स्वागत किया। उन्होनें छह मासीय कोर्स से संबधित जानकारी देते हुए कोर्स वर्क की उपयोगिता पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम के मुख्य तत्कालीन विशेषाधिकारी रह चुके विनोदकुमार कक्कड ने कहा कि यह विश्वविद्यालय शोध के क्षेत्र में यूनिक कार्य कर रहा है। यहां शोध कार्य से सम्बधित सभी प्रकार की सुविधायें उपलब्ध है। कोर्स वर्क के संयोजक डॉ बिजेन्द्र प्रधान ने कहा कि शोध की प्रामणिकता के लिए कोर्स वर्क में आपकी रूचि ही प्रभावी हो सकती है। कार्यक्म का संयोजन करते हुए सह-संयोजक डॉ रविन्द्र सिंह राठौड ने कोर्स वर्क को स्कॉलर के लिए जरूरी बताया। इस अवसर पर देश भर से आये पीएचडी स्कॉलर सहित अनेक लोग उपस्थित थे।

व्याख्यान माला

नैतिक दर्शन पर व्याख्यान माला

15 अक्टूबर, 2016 को संस्थान द्वारा नैतिक दर्शन विषय पर आयोजित व्याख्यान माला को संबोधित करते हुए दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक प्रो आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने नैतिक मूल्यों का वैशिष्ट्य प्रस्तुत करते हुए जर्मनी के दार्शनिक काण्ट के नैतिक दर्शन को प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो बच्छराज दूगड ने भारतीय दर्शन एवं काण्ट के दर्शन की तुलना करते हुए आत्मशुद्धि एवं कर्तव्य को प्रमुख बताया। प्रो दूगड ने कहा कि भारतीय दर्शन श्रेयोन्मुख रहा है। व्याख्यान माला के संयोजक डॉ मनीष भटनागर ने स्वागत एवं डॉ सत्यनारायण भारद्वाज ने आभार ज्ञापित किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के सभी विभागाध्यक्ष एवं शिक्षक उपस्थित थे।

व्याख्यान माला

अनेकान्त में समस्त समस्याओं का हल-प्रो. शास्त्री

राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत प्रख्यात संस्कृत व वैदिक विद्वान प्रो. दामोदर शास्त्री ने कहा है कि जैन दर्शन का अनेकान्त सिद्धान्त अपने आप में अद्वितीय है तथा वर्तमान की समस्त समस्याओं व विवादों का निस्तारण करने में पूरी तरह सक्षम है। उन्होंने यहां जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय के सेमिनार होल में 17 दिसम्बर, 2016 को आयोजित व्याख्यानमाला में मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए कहा कि अनेकान्तवाद में किसी भी विवाद को स्थान नहीं मिलता क्योंकि यह समस्त विचारधाराओं के बीच समन्वयक स्थापित करता है। व्याख्यानमाला का प्रारम्भ समणी प्रणवप्रज्ञा के मंगलाचरण से किया गया तथा अंत में डॉ योगेश कुमार जैन ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने किया।

आधुनिक तकनीकों का उपयोग

आधुनिक तकनीक जहां जीवन के विविध पहलुओं को सुविधाजनक बना रहा है वहीं अब शिक्षा का क्षेत्र भी नई तकनीक से अछूता नहीं रहेगा। यहां जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय आधुनिक तकनीक एवं पद्धतियों को अपनाने में अग्रणी शिक्षण संस्थान है। जनवरी में यहां पर स्मार्ट क्लासेज शुरू जा रही है।

स्मार्ट क्लासेज के लाभ- स्मार्ट क्लासेज इफेक्टिव व इंटरेक्टिव लर्निंग के लिये काम करेगी। स्मार्ट क्लासेज की सुविधा से समय की भी काफी बचत हो सकेगी। इसमें अध्यापक स्क्रीन से दूर खड़ा रहकर भी बोर्ड पर रिमोर्ट के प्रयोग से स्टडी करवा पायेगा। पीपीटी और अन्य सुविधाओं का संचालन इस पर किया जा सकेगा।

2 जनवरी से हो जायेगी कक्षाऐं शुरू- संस्थान में शुरूआत में लगभग दस कक्षाओं को स्मार्ट कलास बनाया जा रहा है। इसके लिए तैयारी की जा रही है ताकि नव वर्ष में इसका प्रारम्भ किया जा सके। इन कक्षाओं में कुछ उपकरण पहले से ही लगाये जा चुके है और शेष उपकरणों को शीघ्र ही स्थापित करके स्मार्ट क्लासों की शुरूआत की जा सकेगी।

'गौरव' सम्मान समारोह का आयोजन

जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री धर्मचन्द लूंकड़ का सम्मान

जीवन जीने की कला सिखाता है जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय-रिणवां

जैन विश्वभारती संस्थान के तत्वावधान में सुधर्मा सभा प्रांगण में 17 सितम्बर, 2016 को आयोजित जैन विश्वभारती के कुलपति के एल पटावरी व अध्यक्ष धर्मचन्द लूंकड के सम्मान में आयोजित समारोह को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि राजस्थान सरकार के वन एवं पर्यावरण मंत्री राजकुमार रिणवां ने कहा कि जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय अपनी शिक्षा के माध्यम से विश्वस्तर पर व्यापक पहचान रखता है। उन्होनें कहा कि आज शिक्षा का माहौल दूषित हो रहा है ऐसे में जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय भावी भविष्य को जीवन जीने की कला का प्रशिक्षण दे रहा है।

मुख्य अतिथि रिणवां ने अपने जीवन से जुडे प्रसंग प्रस्तुत करते हुए संस्थान के द्वारा दी जा रही नैतिक व मानवीय मूल्यों से प्रेरित शिक्षा को उपयोगी बताया। उन्होंने कहा कि यहां लौकिक शिक्षा के साथ साथ संस्कारपरक शिक्षा भी दी जा रही है, यही कारण है कि यह संस्थान देश ही नहीं बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर यूनिक संस्थान के रूप में पहचान रखता है। इससे पूर्व मुख्य अतिथि राज्यमंत्री राजकुमार रिणवां, रैवासा पीठाधीश्वर राघवाचार्य महाराज, विधायक मनोहरसिंह आदि अतिथियों द्वारा जैन विश्वभारती के अध्यक्ष धर्मचन्द लूंकड एवं सभी पदाधिकारियों का अभिनंदन किया गया। स्वास्थ्य कारणों से कुलपति के. एल. पटावरी समारोह में नहीं पहुंच सके।

नैतिक मूल्यों के प्रति आस्था

अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड ने सम्मान समारोह की पृष्ठभूमि को रेखाकिंत करते हुए विश्वविद्यालय की प्रगति में सहयोगी रहे सभी अध्यक्ष एवं कुलपतियों के योगदान की सराहना की। प्रो. दूगड ने कहा कि विश्वविद्यालय का यह संकल्प है कि अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण की दृष्टि को ध्यान में रखते हुए विश्वविद्यालय बुनियादी उद्देश्यों के साथ प्रगति की ओर बढे। उन्होनें विश्वविद्यालय द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर किये जा रहे कार्यो का उल्लेख करते हुए नैतिक मूल्यों के प्रति आस्था व्यक्त की। प्रो दूगड ने अध्यक्ष धर्मचन्द लूंकड को बधाई देते हुए उनके अध्यक्षीय कार्यकाल को उत्कृष्ट बताया।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता मगध विश्वविद्यालय के प्रो. नलिन के शास्त्री ने मानवीय मूल्य, साधना, आध्यात्मिक जीवन एवं इंसानियत की चर्चा करते हुए जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय को महत्वपूर्ण संस्थान बताया। प्रमुख वक्ता समणी नियोजिका प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा ने जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय का परिचय देते हुए विश्वविद्यालय द्वारा किये जा रहे कार्यो को मानव हितकारी बताया। विशिष्ट अतिथि विधायक मनोहर सिंह ने विश्वविद्यालय को लाडनूं का गौरव बताया। कार्यक्रम को सान्निध्य प्रदान करते हुए रैवासा पीठाधीश्वर स्वामी राघवाचार्य ने कहा कि यह संस्थान

वर्तमान युग की जरूरत है, नैतिक शिक्षा के प्रसार से ही देश एवं संस्कृति का विकास संभव है। इस अवसर पर वरिष्ठ समाजसेवी हीरालाल मालू, जैन विश्वभारती के मंत्री अरविन्द गोठी ने भी समारोह को संबोधित किया।

लोकनृत्य व लोकगीतों की प्रस्तुति- इस अवसर पर राजस्थानी लोकनृत्य एवं लोकगीतों की प्रस्तुतियां राजस्थान के चुनिन्दा कलाकारों द्वारा दी गई। बीकानेर की मानसी सिंह पंवार के भवाई नृत्य ने दर्शकों को रोमांचित किया। विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने भी सांस्कृतिक प्रस्तुतिया दी। कार्यक्रम में सम्पादक नेपाल चन्द गंग ने संवाहिनी पत्रिका अतिथियों को भेंट की। अतिथियों का स्वागत प्रो दामोदर शास्त्री, प्रो अनिलधर, प्रमोद बैद, प्रो. आरबीएस वर्मा, विनोद कुमार कक्कड, आर.के. जैन आदि ने किया। कार्यक्रम में जैन विश्वभारती के ट्रस्टी भागचन्द बरडिया, प्रकाश बैद, जीवनमल मालू, राजकुमार चौरडिया, हनुमानमल जांगीड, एसडीएम मुरारीलाल शर्मा आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम की पृष्ठभूमि डॉ. वीरेन्द्र भाटी ने प्रस्तुत की। कार्यक्रम को संयोजन प्रो आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने किया एवं कुलसचिव प्रो. अनिलधर ने आभार व्यक्त किया।

जीर्णोद्धार कार्य का उद्घाटन- इससे पूर्व आचार्य तुलसी महिला छात्रावास के जीर्णोद्धार कार्यक्रम का उद्घाटन जैन विश्वभारती के अध्यक्ष धर्मचन्द लूंकड ने किया। इस अवसर पर कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड सहित अनेक विशिष्टजन उपस्थित थे।

समाज कार्य विभाग

स्वच्छ भारत अभियान जागरूकता रैली का आयोजन

संस्थान के समाज कार्य विभाग के तत्वावधान में 22 सितम्बर, 2016 को विभागाध्यक्ष प्रो आरबीएस वर्मा एवं डॉ बिजेन्द्र प्रधान के निर्देशन में निकटवर्ती दूजार ग्राम में स्वच्छ भारत अभियान जागरूकता रैली का भव्य आयोजन किया गया। संरपच अनिता कंवर ने हरी झण्डी दिखाकर रैली को रवाना किया। रैली अटल सेवा केन्द्र से प्रारम्भ होकर गांव के मुख्य रास्तों से निकली। समाज कार्य विभाग एवं राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, राजस्थान उमावि के विद्यार्थियों ने स्वच्छता अभियान के नारे लगाये एवं ग्रामीणों को स्वच्छता के प्रति जागरूक किया। रैली के समापन पर आयोजित सभा को संबोधित करते हुए ग्राम सेवक राजकुमार जैन ने स्वस्थ भारत अभियान की जानकारी दी। डॉ लक्ष्मण माली ने ग्रामीणों को स्वच्छता के प्रति विशेष सक्रिय रहने का आह्वान किया। इस अवसर पर बंसत सैन, हरदेवाराम, श्रीमती मुन्नी स्वामी, शिंभु सिंह, रामेश्वरलाल, रमेश आदि ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन पूनम सैनी एवं प्रेमसुख टाक ने एवं धन्यवाद सुमित शर्मा ने व्यक्त किया। कार्यक्रम में सागरमल, पूजा प्रजापत, सुमित, हिमांशु आदि का सराहनीय सहयोग रहा।

मानव अधिकार दिवस

अहिंसा एवं शांति विभाग

संस्था के अहिंसा एवं शांति विभाग, द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय मानव अधिकार दिवस 10 दिसम्बर को मनाया गया। इस अवसर पर अहिंसा एवं शांति विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़ ने मानव अधिकारों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के बारे में जानकारी दी। इस अवसर पर प्राच्य विद्या एवं भाषा विभाग के प्रो. दामोदर शास्त्री ने वैदिक व पौराणिक युग में मानव अधिकारों पर प्रकाश डाला तथा अधिकारों के साथ कर्तव्य पालन पर विशेष जोर देने की बात कही। इस उपलक्ष पर समाज कार्य विभाग की सहायक आचार्य डॉ. पुष्पा मिश्रा ने महिला अधिकारों के संरक्षण को ध्यान में रखकर विश्व पटल पर होने वाली घटनाओं पर प्रकाश डाला।

इस अवसर पर योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. प्रद्युम्नसिंह शेखावत ने वर्तमान में मानव अधिकारों के लिए किए जाने वाले प्रयासों के बारे में जानकारी दी। दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि मानव अधिकार मनुष्य को केन्द्र में रखकर बनाये गये हैं। उन्होंने जैन दर्शन के परस्परोपग्रहों जीवानाम् के सिद्धान्त पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर संस्थान के कुलसचिव विनोद कुमार कक्कड़ ने विश्व स्तर पर होने वाली हिंसा को कैसे रोका जाए तथा मानव अधिकारों का संरक्षण के प्रति जागरूकता कैसे लायी जाए, इस बात पर प्रकाश डाला।

इस अवसर पर शिक्षा विभाग के अध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने कहा कि मानव अधिकार को हर समय याद रखना चाहिए। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार ज्ञापन सहायक आचार्य डॉ. विकास शर्मा ने किया।

ओजोन परत संरक्षण दिवस पर विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन

संस्थान के समाजकार्य विभाग के विद्यार्थियों द्वारा 16 सितम्बर, 2016 को ओजोन परत संरक्षण दिवस के अवसर पर स्थानीय बाल भारती शिक्षण संस्थान प्रांगण में विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता निदेशक कन्हैयालाल गोयल ने की। मुख्य अतिथि सहायक आचार्य डॉ पुष्पा मिश्रा ने विद्यार्थियों को ओजोन परत के क्षरण से होने वाले मानवीय दुष्प्रभावों की जानकारी दी। इस अवसर पर आयोजित विविध प्रतियोगिताओं में निबंध प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर सपना, द्वितीय खुशबू एवं तृतीय स्थान पर प्रिंयका रही। इसी प्रकार भाषण प्रतियोगिता में प्रथम अंजू, द्वितीय निकिता रही। पोस्टर मैकिंग प्रतियोगिता में प्रथम रोहित, द्वितीय नेहा एवं तृतीय स्थान पर मुस्कान एवं किशनाराम रहे। इस अवसर पर करणीसिंह ने ओजोन परत का वैज्ञानिक आधार बताया। कार्यक्रम का संयोजन गौरव अरोडा ने एवं आभार ज्ञापन सहायक आचार्य ज्योति स्वामी ने व्यक्त किया।

विद्यार्थी चुनौतियों का सामना करना सीखें - कुलपति

संस्थान के अहिंसा एवं शांति विभाग के अन्तर्गत 3 सितम्बर, 2016 को शिक्षक दिवस पर आयोजित नव प्रवेशित छात्र-छात्राओं के स्वागत कार्यक्रम के अवसर संस्थान के कुलपति प्रो. बी. आर. दूगड़ ने कहा कि विद्यार्थियों को शिक्षा के माध्यम से भविष्य की चुनौतियों का सामना करना सीखना चाहिए। शिक्षा से ही मनुष्य का सर्वांगीण विकास होता है।

कार्यक्रम में विभाग के प्रभारी विभागाध्यक्ष डॉ रविन्द्र सिंह राठौड़ ने नवागन्तुक छात्र-छात्राओं का स्वागत किया तथा उन्हें भविष्य के लिए शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर सह-आचार्य डॉ जुगल किशोर दाधीच ने विद्यार्थियों को ज्ञानार्जन की प्रेरणा दी। कार्यक्रम में विभाग के शोधार्थी उपस्थित थे। विभाग के विद्यार्थी काजल चौहान, प्रेरणा जैन ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी। कार्यक्रम का संचालन कोमल शर्मा ने किया। सहायक आचार्य डॉ विकास शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

अहिंसा एवं शांति विभाग

अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस का आयोजन

मानवता की रक्षा के लिए गांधी के विचार प्रासंगिक-प्रो. दूगड़

संस्थान के अहिंसा एवं शांति विभाग के तत्वावधान में सेमीनार हॉल में अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस का आयोजन 30 सितम्बर, 2016 को कुलपति प्रो बच्छराज दूगड की अध्यक्षता में किया गया। प्रो दूगड ने सभा को संबोधित करते हुए अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस की महत्ता को रेखांकित करते हुए अहिंसा एवं शांति की स्थापना को विश्व स्तर पर जरूरी बताया। कुलपति ने कहा कि विश्व के सामने शांति के अलावा कोई विकल्प नहीं है। अहिंसा एवं शांति के मार्ग पर चलकर ही मानवता की रक्षा की जा सकती है। प्रो दूगड ने अहिंसा एवं शांति के लिये विश्व स्तर पर किये जा रहे प्रयासों में ओर अधिक गति लाने का आह्वान किया।

इस अवसर पर समाज कार्य विभाग के प्रो. आरबीएस वर्मा ने अहिंसक समाज संरचना के लिए शांति एवं सहनशीलता को जरूरी बताया। कुलसचिव प्रो. अनिलधर ने कहा कि मनुष्य स्वभाव से ही अहिंसक है। प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने अहिंसक आन्दोलनों द्वारा देश को मिली स्वतंत्रता को अहिंसा की जीत बताया। विभागाध्यक्ष डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड ने सभी का स्वागत किया। कार्यक्रम में राकेशकुमार जैन, मोनिका भाटी, सुरेन्द्र सिंह आदि ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. विकास शर्मा ने एवं आभार ज्ञापन डॉ. जुगल किशोर दाधीच ने किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग में भी गांधी जयंती का आयोजन किया गया।

एक दिवसीय अहिंसा प्रशिक्षण शिविर आयोजित

संस्थान के अहिंसा एवं शांति विभाग के तत्वावधान में एक दिवसीय अहिंसा प्रशिक्षण शिविर का आयोजन 28 सितम्बर, 2016 को महाप्रज्ञ सभागार में किया गया। शिविर में स्थानीय मौलाना आजाद उच्च माध्यमिक विद्यालय के सौ से अधिक से विद्यार्थियों ने भाग लिया। शिविर को संबोधित करते हुए विभाग के प्रो अनिल धर ने कहा कि अहिंसक जीवन शैली से ही मूल्यों की स्थापना की जा सकती है। उन्होंने कहा कि नैतिकता, करूणा, मैत्री, सहयोग, आपसी भाइचारे, प्रेम की स्थापना अहिंसा प्रशिक्षण के द्वारा ही संभव है। प्रभारी विभागाध्यक्ष डॉ रविन्द्र सिंह राठौड ने हिंसा के दुष्प्रभावों की मीमांसा करते हुए अहिंसा प्रशिक्षण को जरूरी बताया। इस अवसर पर योग विभाग के प्रभारी विभागाध्यक्ष डॉ प्रद्युम्नसिंह शेखावत ने योग एवं आसन का प्राणायाम का प्रशिक्षण देते हुए योग के लाभ बताये। शिविर के संयोजक डॉ विकास शर्मा ने अहिंसा प्रशिक्षण की महत्ता पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर विभाग के शिक्षक एवं विद्यार्थी उपस्थित थे।

स्वच्छता अभियान का आयोजन

संस्थान के अहिंसा एवं शांति विभाग द्वारा 29 सितम्बर, 2016 को स्वच्छ भारत अभियान के अन्तर्गत सफाई अभियान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में अन्तर्गत विश्वविद्यालय परिसर के शैक्षणिक खण्ड, प्रशासनिक खण्ड, आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय, शिक्षा के सामने, बॉलिवॉल ग्राउण्ड, पार्किंग, केंटीन सहित अनेक स्थानों पर स्वच्छता अभियान चलाया गया। कार्यक्रम में प्रो. आरबीएस वर्मा, कुलसचिव प्रो. अनिलधर, डॉ. प्रद्युम्नसिंह शेखावत, डॉ. रविन्द्रसिंह राठौड, डॉ. विकास शर्मा, डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. गिरधारीलाल शर्मा, डॉ. आभासिंह सहित अनेक लोगों ने भाग लेकर स्वच्छता अभियान में सहभागिता की। इस अवसर पर शिक्षक एवं विद्यार्थी उपस्थित थे।

डांडिया -2016

शारदीय नवरात्रा में डांडिया नृत्य प्रतियोगिता आयोजित

जैन विश्व भारती संस्थान के प्रांगण में डांडिया नृत्य प्रतियोगिता का भव्य आयोजन किया गया। प्रतियोगिता आयोजन के उद्घाटन के अवसर पर संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने संभागियों एवं उपस्थितजनों को संबोधित करते हुए कहा कि शारदीय नवरात्रा महोत्सव में डांडिया नृत्य भारतीय संस्कृति की प्राचीन पहचान को उजागर करती हैं। संस्थान के कुलसचिव विनोद कुमार कक्कड़ ने कहा कि छात्राएं स्वयं देवी का रूप होती है और ये छात्राएं देवी के प्रति जो आराधना प्रतियोगिता के रूप में कर रही हैं वे वास्तव में भारत माता की प्रतीक लगती है। आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. जुगल दाधीच ने स्वागत भाषण में कहा कि गरबा प्रतियोगिता केवल श्रद्धा एवं भक्ति का प्रतीक ही नहीं है, बल्कि इस प्रतियोगिता से विद्यार्थियों में आत्म-विकास की जागृति भी होती है। शारदीय नवरात्रा महोत्सव में आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय की 7 ग्रुप में 50 विद्यार्थियों ने विभिन्न पारम्परिक वेशभूषाओं में डांडिया (गरबा) नृत्य किया। इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर तमन्ना फुलफगर, मिलन भोजक, हिमानी राठौड़, निकिता शर्मा, ज्योति राजपुरोहित, दीप्ति दूगड़, पुष्पा भाटी, द्वितीय स्थान पर मुस्कान नवलखा, निकिता दाधीच, धन्नी चोयल, मीनाक्षी जैन, मुस्कान शर्मा, पिंकी पारीक, सलोनी जैन, वृंदा दाधीच, दिव्या कंवर, सुमित्रा घासल, तृतीय स्थान पर सीमा शेखावत, पूजा पंवार, हेमलता शर्मा, मीनू रोड़ा, आरती सोलंकी, कोमल चौधरी, वंदना प्रजापत, वंदना रही। इससे पूर्व कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए नगरपालिका की चैयरमेन श्रीमती संगीता पारीक ने कहा कि विद्यार्थियों ने बहुमुखी प्रतिभाओं को निखारने का सुअवसर डांडिया प्रतियोगिता है। धन्यवाद उप प्राचार्या पूजा जैन ने दिया। कार्यक्रम का संचालन प्रभा डागा एवं दिव्या जांगिड़ ने किया।

यूथ कॅरियर फेयर

आत्मविश्वास एवं शिक्षा से कॅरियर का निर्माण : डॉ. जसबीर सिंह

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय द्वारा 19 अक्टूबर, 2016 को परिसर स्थित सुधर्मा सभा में 'यूथ फेस्टिवल एवं कॅरियर फेयर' का उद्घाटन किया गया। उपस्थित जन समूह को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि डॉ. जसबीर सिंह (अध्यक्ष अल्पसंख्यक आयोग, राजस्थान सरकार, जयपुर) ने कहा कि आत्मविश्वास एवं शिक्षा से कॅरियर को उन्नत निर्माण किया जा सकता है। उन्होंने छात्राओं को शिक्षित करने को सबसे बड़ा धर्म बताया। शिक्षा को जीवन का आधार बताते हुए कहा कि शिक्षा, शोध तथा तकनीक के आधार पर देश को उन्नति के शिखर पर पहुंचाया जा सकते हैं। प्रो. बच्छराज दूगड़, कुलपति ने कार्यक्रम की अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि देश सेवा व सम्मान सर्वप्रथम है। अरूनिमा सिन्हा के माऊन्ट एवरेस्ट फतह की प्रेरणादायक घटना तथा स्टीफन हॉकिन्स के शारीरिक अक्षमता के बावजूद संसार में भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में उनके योगदान को छात्राओं के समक्ष रखा।

जैन विश्व भारती के ट्रस्टी भागचन्द बरडिया एवं संस्थान के कुलपति प्रो. बी.आर. दूगड़ ने अतिथियों का मोमेन्टो एवं शाल भेंट कर अभिनन्दन किया। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. जुगल दाधीच ने अतिथियों का स्वागत एवं परिचय देते हुए यूथ फेस्टिवल के उद्देश्य एवं प्रारूप की विस्तृत जानकारी दी। प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा ने विद्यार्थियों से लक्ष्य प्राप्ति के लिए आत्मविश्वास तथा सकारात्मक सोच को अतिआवश्यक बताया। संस्थान के कुलसचिव डॉ. विनोद कुमार कक्कड़ ने विद्यार्थियों को सर्वप्रथम अपना लक्ष्य तय कर ईमानदारी से मेहनत करने को कहा। प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, निदेशक, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय ने सभी आगुन्तकों का आभार एवं धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संयोजन अंकिता जांगीड़ ने किया तथा संचालन महाविद्यालय की छात्राएं दिव्या जांगिड़ तथा प्रभा डागा ने किया। कार्यक्रम में उपखण्ड अधिकारी मुरारी लाल शर्मा, नागौर प्रोग्राम ऑफिसर बसीर खान एवं लाडनूं के गणमान्य नागरिक, पत्रकार, विभिन्न स्कूलों के विद्यार्थियों ने भाग लिया।

यूथ कॅरियर फेयर में छात्राओं की ओर से विभिन्न खाद्य सामग्री सहित कॅरियर से जुड़ी कुल 16 स्टॉलें लगाई गई। मुख्य अतिथि जसबीर सिंह, अध्यक्ष अल्पसंख्यक आयोग, राजस्थान सरकार ने बच्चों की ओर से लगाई गई स्टॉल का उद्घाटन किया एवं छात्राओं के इस कार्य की भूरी-भूरी प्रशंसा करते हुए उनका उत्साह वर्धन किया। स्टॉलों की प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान के लिए निर्णायक का दायित्व तत्कालीन विशेषाधिकारी नेपाल चंद गंग, सहायक आचार्य सरोज राय एवं सहायक निदेशक नुपूर जैन ने निभाया। प्रातः 10 बजे से शाम 5 बजे तक चले इस फेयर में अनेक लोगों ने प्रदर्शनी का अवलोकन किया।

नवप्रवेशित विद्यार्थियों का समारोह पूर्वक स्वागत

जैन विश्वभारती संस्थान विश्वविद्यालय से सम्बद्ध आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में 4 अगस्त, 2016 को नवप्रवेशित प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों का स्वागत समारोह आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने बच्चों को मनोरंजन के साथ कर्तव्य निर्वहन की शिक्षा दी। प्राचार्य डॉ. जुगलकिशोर दाधीच ने विद्यार्थियों को अपने शब्दों से प्रात्साहित किया। उप प्राचार्य पूजा जैन ने आभार ज्ञापित किया। इस कार्यक्रम में अनेक सांस्कृतिक गतिविधियों नृत्य, गायन, माईम, नाटक, फनी एक्ट आदि का आयोजन विद्यार्थियों द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संयोजन विद्यार्थी प्रभा डागा एवं दिव्या जागिड़ ने की। समारोह के संयोजक कमल मोदी, सुश्री अंकिता जांगिड़ व प्रमोद कुमार सैनी थे।

तीन दिवसीय व्यक्तित्व विकास शिविर आयोजित

जैन विश्व भारती संस्थान से सम्बद्ध आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में त्रि-दिवसीय व्यक्तित्व विकास शिविर का आयोजन 21 जुलाई, 2016 को किया गया। इस शिविर का उद्घाटन विश्वविद्यालय के प्रेक्षाध्यान सभागार में समणी नियोजिका ऋजुप्रज्ञा की अध्यक्षता में किया गया। शिविर में पारूल दाधीच ने छात्राओं को प्रेक्षाध्यान आदि का अभ्यास करवाया। छात्राओं को मार्शल आर्ट में ब्लैक बेल्ट धारी विकास कुमार ने आत्मरक्षा के गुर सिखाए। जीवन-विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. प्रद्युम्नसिंह शेखावत ने प्रेक्षाध्यान तथा उप-प्राचार्य पूजा जैन, सहायक आचार्य प्रमोद कुमार ने व्यक्तित्व विकास पर प्रेरणादायक व्याख्यान प्रस्तुत किया। इसके अलावा प्रेक्षाध्यान एवं लाफिंग थैरेपी का अभ्यास डॉ. प्रद्युम्न सिंह शेखावत ने करवाया। छात्राओं के द्वारा क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया तथा संस्थान की प्रेरणादायक फिल्म भी दिखाई गई। समापन समारोह विश्वविद्यालय के ऑडिटोरियम में आयोजित किया गया, जिसमें दिव्या जांगिड़, ज्योति राजपुरोहित, सुष्मिता आदि ने शिविर के अपने अनुभव बताए। कार्यक्रम की अध्यक्षता दूरस्थ विभाग के निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने की। उन्होंने छात्राओं को व्यक्तित्व विकास के बारे में बहुत से सारगर्भित सुझाव प्रदान करते हुए इसकी महत्ता बताई। उप-प्राचार्य पूजा जैन ने भी व्याख्यान में बताया कि किस प्रकार से शिक्षा के साथ संस्कार होने पर व्यक्ति ऊँचाई को छू सकता है। कार्यक्रम के अंत में सहायक आचार्य डॉ. प्रगति भटनागर ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

महिला एनसीसी दल का दस दिवसीय शिविर जोधपुर में

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय की महिला एनसीसी की 16 छात्रायें 25 दिसम्बर को जोधपुर के लिये रवाना हुई। एनसीसी की 3 राज बटालियन की ओर से महाराजा हनुवंत सिंह मैमोरियल गर्ल्स कॉलेज में आयोजित एनसीसी कैम्प में ये छात्राओं ने भाग लिया। इस दस दिवसीय शिविर में दल प्रभारी भूपेन्द्र सिंह के नेतृत्व में जोधपुर गई थी।

बैंकिंग में कॅरियर की संभावनाएं

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय एवं कैरियर काउन्सलिंग सैल के संयुक्त तत्वावधान में 16 सितम्बर, 2016 को व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। बैंकिंग विषय पर बोलते हुए पंजाब नेशनल बैंक के प्रबन्धक पवन स्वामी ने विद्यार्थियों को बैंकिंग के क्षेत्र में रोजगार के अवसर, उनकी तैयारी करने का तरीका एवं उनके कैरियर को लेकर मार्गदर्शन दिया।

संस्थान के तत्कालीन विशेषाधिकारी विनोद कुमार कक्कड़ ने विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करते हुए अध्ययन के लिए सभी सुविधायें उपलब्ध करवाने का आश्वासन दिया एवं भविष्य में विद्यार्थियों के कैरियर को लेकर सभी मुख्य क्षेत्रों से सम्बन्धित विशेषज्ञों को व्याख्यान माला के लिए आमन्त्रित करने का आश्वासन दिया। प्राचार्य डॉ. जुगल दाधीच ने स्वागत भाषण व उप-प्राचार्य व कैरियर काउन्सलिंग सैल की समन्वयक पूजा जैन ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में शिक्षक एवं विद्यार्थी उपस्थित थे। संयोजन छात्रा दिव्या जांगीड़ ने किया।

शिक्षक दिवस पर नई सोच पर बल

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में शिक्षक दिवस का पूर्व आयोजन 2 सितम्बर, 2016 को कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ की अध्यक्षता हुआ। कुलपति प्रो. दूगड़ ने अपने उद्बोधन में विद्यार्थियों को जीवन में प्रतिपल कुछ नया करने, नया सोचने पर बल दिया तथा महापुरुषों, माता-पिता एवं शिक्षकों के जीवन से प्रेरणा लेने का आह्वान किया। संस्थान के विशेषाधिकारी रहे विनोद कुमार कक्कड़ ने भी छात्राओं को ज्ञान के लिए लालायित रहने की प्रेरणा दी और कहा कि प्रत्येक छात्रा अपने जीवन में बहुत आगे बढ़ सकती है बशर्ते कि वह निरन्तर प्रयासरत रहे।

सांस्कृतिक कार्यक्रम में छात्रा किरण सिंघी, आरजू खान, माया शर्मा, पलक सोनी, लिछमा डारा, श्वेता चौहान ने शिक्षाप्रद नाटक प्रस्तुत किया। पूजा शर्मा आरती सोलंकी, किरण बानो, निकिता दाधीच, रिया जैन आदि ने गीत एवं नृत्य के माध्यम से आकर्षक प्रस्तुतियां दी। इस अवसर पर छात्राओं ने अपने गुरुओं को उपहार देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम का संयोजन मुस्कान एवं रश्मि ने किया। कार्यक्रम को प्राचार्य डॉ जुगलकिशोर दाधीच ने भी सम्बोधित किया।

कॅरियर निर्माण कार्यशाला

संस्थान के कॅरियर काउन्सलिंग सैल के तत्वावधान में आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के ऑडिटोरियम में 15 अक्टूबर, 2016 को ''कॅरियर 12वीं के बाद'' विषय पर कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला में लाड मनोहर उच्च माध्यमिक विद्यालय, भुतोड़िया बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय एवं केसरदेवी बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय की 12वीं कक्षा की छात्राओं एवं शिक्षकों ने भाग लिया। आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. जुगलकिशोर दाधीच ने विद्यार्थियों एवं शिक्षकों का स्वागत करते हुए शिक्षक और विद्यार्थी के बीच अच्छे संबंधों पर जोर देते हुए अपनी बात रखी। महाविद्यालय की उप-प्राचार्या पूजा जैन ने प्रजेण्टेशन से 12वीं के बाद कॅरियर के लिए विभिन्न विकल्पों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। संस्थान के कुलसचिव विनोद कुमार कक्कड़ ने कॅरियर गाइडेंस में जैन विश्वभारती संस्थान के योगदान का जिक्र किया और संस्थान द्वारा प्रारम्भ किये जा रहे नये कॉर्सेज बी.ए.-बी.एड. एवं बी.एससी.-बी.एड. तथा सूचना प्रौद्योगिकी के रोजगारोन्मुखी अल्पकालिक पाठ्यक्रमों की जानकारी दी। छात्राओं द्वारा विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों और अन्य प्रतियोगिता परीक्षाओं से संबंधित पूछे गये प्रश्नों का संतोषजनक उत्तर संकाय सदस्यों ने दिया एवं विद्यार्थियों को भविष्य के लिए मार्गदर्शन दिया। विद्यालयों के शिक्षकों ने भी अपने विचार व्यक्त किये। सहायक आचार्य मधुकर दाधीच ने आभार ज्ञापन किया। स्कूल के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने जैन विश्वभारती संस्थान का भ्रमण किया एवं यहां की व्यवस्था एवं संसाधनों की प्रशंसा की।

बहुत जरूरी है दूरस्थ शिक्षा में गुणवत्ता का होना - प्रो. व्यास

संस्थान के दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के तत्वावधान में 24-25 अक्टूबर को दो दिवसीय क्षेत्रीय समन्वयक कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला के शुभारंभ सत्र के मुख्य अतिथि जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय के निवर्तमान प्रोफेसर के. एन. व्यास ने कहा है कि शिक्षा हमें अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाती है। आचार्य तुलसी के स्वप्नों को लेकर बना यह विश्वविद्यालय उनकी भावनाओं को पूर्त करने में पूर्ण सफल हो रहा है। आचार्य तुलसी महिला शिक्षा के विशेष हिमायती थे। उन्होंने शिक्षा में गुणवत्ता लाने के लिए अत्यधिक बल दिया था। यह विश्वविद्यालय शिक्षा के क्षेत्र में जो कार्य कर रहा है वह अद्वितीय है। महिला शिक्षा विकास की दृष्टि से इस संस्थान द्वारा किया जा रहा कार्य प्रशंसनीय है। संस्थान को उन्होंने गुणवता पूर्ण शिक्षा के लिये बेहतर बताया।

अच्छे कार्य के लिये समन्वयक सम्मानित- कार्यक्रम के अध्यक्ष प्रो. बच्छराज दूगड़ ने संस्थान के दूरस्थ शिक्षा पाठ्यक्रम में प्रामाणिकता पर बल दिया। उन्होंने समन्वयकों को प्रेरित करते हुए कहा कि सभी अपने-अपने क्षेत्रों में कार्य करें। महिला शिक्षा को केन्द्र में रखें। उन्होंने कहा कि दूरस्थ शिक्षा में आधुनिक तकनीकी का उपयोग जरूरी है। दूरस्थ शिक्षा के निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कार्यक्रम की रूपरेखा एवं स्वरूप को प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का शुभारम्भ समणी मृदुप्रज्ञा के मंगल संगान के साथ हुआ। कुलसचिव विनोद कक्कड़ ने स्वागत वक्तव्य दिया। इस अवसर पर अच्छे कार्य के लिए समन्वयकों देवातु के दिव्या राठौड़, सीकर के दुर्गालाल पारीक, सांचौर के युधिष्ठिर श्रीमाली, गच्छीपुरा के हनुमानाराम तथा जोधपुर के कुशलराज समदडिया को कुलपति एवं मुख्य अतिथि द्वारा सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संयोजन नूपुर जैन एवं आभार ज्ञापन जे. पी. सिंह ने किया।

कार्यशाला का समापन - क्षेत्रीय समन्वयक कार्यशाला का समापन समणी नियोजिका प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा के सान्निध्य में प्रो. अनिल धर की अध्यक्षता में किया गया। प्रो. धर ने कहा कि दूरस्थ शिक्षा उन सभी लोगों के लिए अत्यन्त उपयोगी है जो निजी कारणों से अपने अध्ययन को आगे नहीं बढ़ा पाते। संस्थान के लिए समन्वयकगण जो कार्य कर रहे हैं वह एक अनूठी सेवा है। प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा ने कहा कि विभिन्न क्षेत्रीय समन्वयकों की जो नि: स्वार्थ सेवा है वह प्रशंसनीय है। शिक्षा से समस्त समस्याओं का समाधान संभव है। दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने इस अवसर पर बताया कि विविध क्षेत्रों में दूरस्थ शिक्षा के लिये कार्य कर रहे लगभग 82 क्षेत्रीय समन्वयकों ने इस कार्यशाला का लाभ उठाया।

भारतीय संस्कृति का हिस्सा है खेल भावना - प्रो. दूगड़

संस्थान के क्रीड़ा अनुभाग द्वारा आयोजित वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिताओं का 17 दिसम्बर, 2016 को उद्घाटन करते हुए कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा है कि खेल भावना पर भारतीय संस्कृति में पूरा बल दिया गया और उसी की अनुपालना इस विश्वविद्यालय में की जाती है। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ बुद्धि का विकास संभव है। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार विनोद कुमार कक्कड़ ने जानकारी दी कि आगामी सत्र से विश्वविद्यालय में शैक्षणिक कैलेण्डर के साथ एक्टीविटिज का कैलेण्डर भी जारी किया जावेगा। इस अवसर पर कुलपति प्रो. दूगड़ व रजिस्ट्रार कक्कड़ ने गोला फेंक कर प्रतियोगिताओं का शुभारंभ किया। कार्यक्रम के अंत में क्रीड़ा समिति के सदस्य डॉ रविन्द्र सिंह ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ प्रद्युम्न सिंह शेखावत ने किया।

प्रतियोगिताओं के परिणाम

शनिवार को आयोजित एथलेटिक्स प्रतियोताओं के महिला वर्ग में गोला फेंक में प्रथम सुमन शर्मा, द्वितीय सुमन पूनियां व तृतीय मंजू रही। तस्तरी फेंक में प्रथम मंजू, द्वितीय पिंकी व तृतीय सुमन पूनियां रही। 100 मीटर दौड़ में प्रथम पुष्पा घोटिया, द्वितीय सुमन जाट, तृतीय सुमन पूनियां रही। 200 मीटर दौड़ में प्रथम सुनिता कुमारी, द्वितीय पुष्पा घोटिया व तृतीय माया शर्मा रही। ऊंची कूद में प्रथम परवीना कंवर, द्वितीय पुष्पा घोटिया व तृतीय प्रियंका रिणवा रही। लंबी कूद में प्रथम प्रियंका रिणवा, द्वितीय पुष्पा भोजक व तृतीय परवीना कंवर रही। एथेलेटिस पुरुष वर्ग में गोला फेंक में प्रथम नरेन्द्र सिंह, द्वितीय इन्द्राराम, तृतीय महेन्द्र सिंह शेखावत रहे। 100 मीटर दौड़ में प्रथम इन्द्राराम, द्वितीय आनन्द पाल सिंह व तृतीय मनोज मण्डा रहे। 200 मीटर दौड़ में प्रथम इन्द्राराम, द्वितीय आनन्दपाल सिंह व तृतीय शिंवराज सिंह रहे।

19 दिसम्बर, 2016 को बेडमिन्टन, शतरंज, केरम व टेबिल टेनिस प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में कुल 147 विद्यार्थियों ने भाग लिया। कोच भूपेन्दसिंह ने बताया कि टेबल टेबिल टेनिस में प्रथम स्थान कमला पारीक ने प्राप्त किया, दूसरे स्थान पर अदिति कवंर व तीसरे स्थान पर मंजू रही। इसमें कुल 16 छात्राओं ने भाग लिया। केरम प्रतियोगिता में छात्रा वर्ग के परिणामों में सुरैया बानो प्रथम रही, द्वितीय स्थान परवीना कंवर व तृतीय स्थान पर कृष्णा चौहान रही। छात्र वर्ग में प्रथम अजय राठौड़, द्वितीय सुमित शर्मा व तृतीय मनीष भाटी रहे। इस प्रतियोगिता में कुल 68 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। शतरंज प्रतियोगिता में छात्र वर्ग से 7 प्रतिभागी रहे, जिनमें प्रथम अभिनेष पंवार द्वितीय सुमित शर्मा व तृतीय कौशल मेहता रहे। छात्रा वर्ग में 70 प्रतिभागी रहे जिनमें दमयंती जाट प्रथम, कृष्णा चौहान द्वितीय व दीप्ति अरोड़ा तृतीय स्थान पर रही। बेडमिन्टन प्रतियोगिता छात्रा वर्ग में 40 प्रतिभागियों ने भाग लिया जिसमें दीप्ति अरोड़ा प्रथम, अलका गुर्जर द्वितीय तथा साक्षी शर्मा तृतीय स्थान पर रही। प्रतियोगिताओं के निर्णायक नरेन्द्र सैनी, डॉ विष्णु कुमार, डॉ प्रद्युम्नसिंह शेखावत, डॉ रविन्द्र सिंह व भूपेन्द्र सिंह थे। 20 दिसम्बर को खो-खो प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

मुनिवृन्द ने किया जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय का अवलोकन

शासन श्री मुनिश्री विमल कुमार ने कहा है कि जैन विश्व भारती संस्थान अन्य सभी विश्वविद्यालयों से विलक्षण है। इस संस्थान की अपनी गरिमा है। संस्थान के विकास में गुरुदेव तुलसी, आचार्यश्री महाप्रज्ञ एवं आचार्यश्री महाश्रमण के साथ अब तक रहे कुलपतियों का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इस संस्थान को आगे बढ़ाने में विद्यार्थियों की भूमिका भी सबसे महत्वपूर्ण होती है। आप जो संस्कार यहां से ग्रहण करते है उन अच्छे संस्कारों को अपने जीवन में भी बनाये रखे। यहां के विद्यार्थी जहां भी जाये उनके संस्कार बोलने चाहिए। संस्कारों को जीवन भर सुरक्षित बनाये रखना विद्यार्थियों की जिम्मेवारी है। मुनिश्री विमल कुमारजी ने 16 दिसम्बर, 2016 को जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय का अवलोकन किया तथा उसके बाद एसडी घोड़ावत ओडिटोरियम में विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए विश्वविद्यालय की व्यवस्थाओं को सराहा तथा कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ को कार्यकाल व कार्य की प्रशंसा की। इस अवसर पर कुलपति प्रो. दूगड़ ने अपने संबोधन में कहा कि ईंट और पत्थरों से हुआ विकास सब कुछ नहीं होता। यहां तपस्वी संतो के निरन्तर जुड़े रहने से यहां का परिसर गरिमामय बन गया है।

ध्यान परिणामों के लिए प्रयुक्त मशीनों की सराहना

शासनश्री मुनिश्री विमलकुमार अपने सहयोगी साधुवृंद मुनि मधुर, मुनि अक्षय, मुनि धन्य, मुनि अजय प्रकाश व प्रेक्षाध्यान शिविर संचालक श्रेयांस बेगवानी के साथ जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय के जैनविद्या विभाग, प्राच्यविद्या एवं भाषा विभाग, योग एवं जीवन विज्ञान विभाग, योग संबंधी प्रयोगशालाओं, अहिंसा एवं शांति विभाग, समाज कार्य विभाग, महाप्रज्ञ सभागार, प्राकृतिक चिकित्सा कक्षों, प्रशासनिक खण्ड, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, कम्प्यूटर लैब, महिला सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र, शिक्षा विभाग, आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय, केन्द्रीय शैक्षणिक भवन आदि का अवलोकन किया। उन्हें विभिन्न विभागाध्यक्षों आदि ने संबंधित विभागों की गतिविधियों व व्यवस्थाओं की जानकारी दी। मुनिश्री ने यहां की व्यवस्थाओं की सराहना की। वे ध्यान एवं योग के परिणामों की जांच व विश्लेषण के लिए स्थापित की गई प्रयोगशालाओं को देखकर अभिभूत हुए। उन्होंने ब्रेन मेपिंग, लाई डिटेक्टर, स्पाइरो मीटर, रक्त जांच, मल्टी पेरा मोनिटर, एनसीवी आदि की कार्य प्रणाली को देखा व समझा तथा उन्हें उपयोगी बताया। उनके साथ अवलोकन के द्वारा कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़, रजिस्ट्रार विनोद कुमार कक्कड़, दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, उप कुलसचिव नेपालचंद गंग आदि साथ थे।

तीन दिवसीय सांस्कृतिक प्रतियोगितायें आयोजित

विद्यार्थियों की क्षमताओं को उजागर करें - प्रो. दूगड़

संस्थान के अन्तर्गत तीन दिवसीय (14-16 दिसम्बर) सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं का शुभारंभ 14 दिसम्बर 2016 को एसडी घोड़ावत ऑडिटोरियम में किया गया। संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता करते हुए कहा कि विद्यार्थियों में विभिन्न क्षमताएँ मौजूद रहती हैं उन्हें पहचानने और बाहर निकालने का काम शिक्षकों को शिक्षण कार्य के साथ करना चाहिए। कुलपति दूगड़ ने प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करते हुए घोषणा की कि राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम आने वाले विद्यार्थियों को 5100 रुपये तथा ग्रुप को 7100 रुपये विश्वविद्यालय की ओर से दिये जायेंगे। इसके अलावा राज्य स्तर पर प्रथम व द्वितीय रहने वाले विद्यार्थी व ग्रुप को क्रमशः 2100 एवं 3100 रुपये का नकद पुरस्कार दिया जायेगा। उन्होंने छात्राओं से आह्वान किया कि वे इन प्रतियोगिताओं के जरिये अपनी रचनात्मकता को बाहर निकाले तथा विश्वविद्यालय को अद्वितीय बनाने में अपनी भूमिका निभाये। इस अवसर पर उन्होंने अगले सत्र से विश्वविद्यालय की परीक्षा पद्धति को बदलने की घोषणा की तथा बताया कि अब केवल सेमेस्टर के अंत में वार्षिक परीक्षाएं ही नहीं बल्कि हर यूनिट के समाप्त होने पर इंटरनल परीक्षाएं भी होगी।

झिझक मिटायें विद्यार्थी

कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलसचिव वी.के. कक्कड़ ने अपने संबोधन में एकेडमिक कैलेण्डर की तर्ज पर स्पोर्ट्स एक्टीविटिज का कैलेण्डर भी तैयार करना जरूरी बताया, जिससे संस्थान में खेल व कला संबंधी गतिविधियां सुचारू हो सकेगी।

समारोह का आरंभ रागिनी शर्मा द्वारा नृत्य प्रस्तुति के साथ सरस्वती वंदना द्वारा किया गया। सांस्कृतिक प्रभारी डॉ. अमिता जैन ने सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं की जानकारी दी। प्रो. आर.बी.एस. वर्मा व प्रो. बी.एल. जैन ने अतिथियों का स्वागत किया। अंत में धन्यवाद ज्ञापन डॉ. विवेक माहेश्वरी ने किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अदिति गौतम ने किया। बुधवार को नाटक प्रतियोगिता, मेहंदी प्रतियोगिता एवं पोस्टर पेंटिंग प्रतियोगिता आयोजित की गई। इन प्रतियोगिताओं में निर्णायक के रूप में प्रो. दामोदर शास्त्री, उपकुलसचिव नेपालचंद गंग, डॉ प्रद्युम्नसिंह शेखावत, डॉ प्रगति भटनागर, डॉ सरोज राय व डॉ. ज्योति स्वामी मौजूद थे।

भाषण प्रतियोगिता

15 दिसम्बर को भाषण प्रतियोगिता में एक भारत श्रेष्ठ भारत विषय पर सात प्रतिभागियों कोमल चौधरी, प्रीति स्वामी, सुमन सोमड़वाल, शिवानी गहलोत, रागिनी शर्मा, सुनिता सारण, चंचल गौड़ व मुमुक्षु आरती ने अपने विचार व्यक्त किये। डॉ. अंकिता जांगिड़ व डॉ. बी. प्रधान ने निर्णायकों का स्वागत किया। प्रतियोगिता के निर्णायक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, प्रो. बी.एल. जैन व डॉ गिरधारीलाल शर्मा थे। कार्यक्रम के अंत में सांस्कृतिक समन्वयक डॉ. अमिता जैन ने आभार ज्ञापित किया। प्रतियोगिता का संचालन डॉ. गिरिराज भोजक ने किया।

रंगोली प्रतियोगिता में सजाई मनमोहक रंगोलियां

रंगोली प्रतियोगिताओं में संस्थान के शिक्षा विभाग परिसर में छात्राओं के 17 समूहों द्वारा विभिन्न आकर्षण रंगोलियां सजाई गई। डॉ. बी. प्रधान, डॉ. सुनिता इन्दौरिया, अंकिता जांगिड़ व सोनिका जैन ने निर्णायक के तौर पर इन रंगोलिया का अवलोकन किया।

विचित्र वेशभूषा व एकल गायन प्रतियोगिताएं आयोजित

विश्वविद्यालय के एसडी घोड़ावत ऑडिटोरियम में आयोजित विचित्र वेशभूषा, मूकाभिनय एवं एकलगायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता के निर्णायक अनूप तिवाड़ी, हेमलता, डॉ. पुष्पा मिश्रा थी। पूजा वशिष्ठ व सुनिता सारण ने मंच का संचालन किया।

16 दिसम्बर 2016 को कार्यक्रम के समापन के अवसर पर कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा कि प्रस्तुति में संभागी को पूर्ण रूप से तल्लीन होना आवश्यक है। रजिस्ट्रार विनोद कुमार कक्कड़ ने अपने संबोधन में कहा कि इन सांस्कृतिक कार्यक्रमों को देखने के बाद प्रतीत होता है कि विद्यार्थियों में भरपूर ऊर्जा है, लेकिन यह ऊर्जा निरन्तर बरकरार रहनी चाहिए तथा प्रदेश व राष्ट्रीय स्तर पर होने वाली प्रतियोगिताओं में इस जोश व ऊर्जा के कारण यह साबित हो सके कि यह विश्वविद्यालय किसी से कम नहीं है। समाज कार्य विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. आर.बी.एस. वर्मा ने इस अवसर पर कहा कि प्रत्येक विद्यार्थी को हर क्षेत्र में शिक्षित व प्रशिक्षित किया जाये तभी उसकी शिक्षा पूर्ण होती है। प्रारंभ में अंकिता जांगिड़ ने सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। अंत में सांस्कृतिक समन्वयक डॉ. अमिता जैन ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम में सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं के तहत एकल लोक नृत्य, एकल फिल्मी नृत्य एवं सामूहिक नृत्य प्रतियोगिताओं का आयोजित किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. गिरिराज भोजक ने किया।

प्रतियोगिता के परिणामों की घोषणा

नाटक प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर विजयश्री रांकावत व समूह रहा, द्वितीय स्थान पर पार्वती एवं समूह तथा तृतीय स्थान पर चंचल गौड़ व समूह रहे। मेहंदी प्रतियोगिता में तब्बसुम ने पहला स्थान प्राप्त किया, अलका चौधरी दूसरे और अंकिता मारू तीसरे स्थान पर रही। पोस्टर पेंटिंग प्रतियोगिता में पहले स्थान पर सुमन लटियाल, द्वितीय स्थान पर प्रीति स्वामी व तृतीय स्थान राधा मूण्ड रही। रंगोली प्रतियोगिता में अंकिता मारू एवं समूह प्रथम स्थान पर, कैलाश देवी व समूह द्वितीय स्थान पर और सरिता राहड़ व समूह तृतीय स्थान पर रहे। भाषण प्रतियोगिता में कोमल चौधरी व मुमुक्षु आरती प्रथम स्थान पर रही। द्वितीय स्थान पर रागिनी शर्मा व तृतीय स्थान पर सुनिता सहारण रही। विचित्र वेशभूषा मय मूकाभिनय प्रतियोगिता में प्रथम अंकिता मारू, द्वितीय राधा मूण्ड और तृतीय चंचल गौड़ रही। एकल लोक गायन में सुरक्षा जैन प्रथम, आंकाक्षा द्वितीय व रागिनी तृतीय रही। फिल्मी एकल गायन में सुरक्षा जैन प्रथम, आकांक्षा द्वितीय व मुमुक्षु शिक्षा तृतीय रही। फिल्मी एकल नृत्य में पहले स्थान में आनन्दपाल सिंह जोधा, द्वितीय स्थान पर रागिनी शर्मा व विजयश्री रांकावत और तृतीय स्थान पर अंकिता मारू रही। एकल लोक नृत्य में सुमन सिमल प्रथम, आरती द्वितीय व साक्षी शर्मा तृतीय रही। सामूहिक लोक नृत्य में प्रथम स्थान पर अंकिता मारू व समूह, द्वितीय स्थान पर दिव्या सैनी व समूह तथा तृतीय स्थान पर चंचल गौड़ व समूह रहे।

जैन विश्वभारती संस्थान के बढ़ते चरण

विविध नियमावलियों का निर्माण-

- छात्रावास नियम • मैस नियम • अतिथिगृह नियम
- छात्रवृत्ति नियम • शोध-परियोजना नियम
- प्रोफेसर एमरिट्स नियम • ट्यूशन फीस संबंधित नियम
- संसाधनों का सम्यक् उपयोग संबंधित नियम

- संस्थान के कर्मचारियों की गुणवत्ता विकास के लिए नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम का प्रारम्भ।
- राजस्थान कौशल एवं आजीविका विकास निगम द्वारा प्रायोजित योग, ध्यान एवं प्राकृतिक चिकित्सा प्रशिक्षण कार्यक्रम की दो यूनिटों का प्रारम्भ।
- संस्थान में शिक्षकों एवं शिक्षकेतर कर्मचारियों के लिए ड्रेस कोड लागू।
- संस्थान द्वारा मातृ-संस्था जैन विश्वभारती को कम्प्यूटर एवं अन्य इलेक्ट्रोनिक उपकरण प्रदान कर सहयोग किया गया।
- संस्थान में प्रथम बार 10 कक्षा-कक्षों को स्मार्ट क्लासरूम में परिवर्तन किया गया।
- जैन-विद्या के विकास हेतु महिला मण्डल द्वारा संचालित पाठ्यक्रम में संस्कृत एवं प्राकृत के 6 माह के प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम प्रारम्भ किये गए।
- जैन-विद्या के विकास के लिए संस्थान में पाक्षिक व्याख्यानमाला प्रारम्भ।
- शिक्षकों को संस्थान द्वारा पहली बार पायलट एवं लघु-शोध परियोजनाओं के रूप में Start-up अनुदान दिया गया।
- जैन विद्वानों से सम्पर्क कर उन्हें माह में 3-7 दिन संस्थान में समय देने हेतु निवेदन। कुछ विद्वानों ने स्वीकृति प्रदान की।
- जैन-विद्या परियोजनाओं के विकास के लिए कार्यशाला का आयोजन एवं मार्गदर्शिका तैयार करवाई गई।
- महिला छात्रावास के नवीनीकरण का कार्य सम्पन्नता।
- आवश्यक रिक्त पदों पर शिक्षकों की नियुक्तियाँ।
- संस्थान में पहली बार विज्ञान संकाय का प्रारम्भ।
- बी.ए.-बी.एड. एवं बी.एस-सी.-बी.एड. समन्वित कार्यक्रम प्रारम्भ।

जैन विद्या से संबंधित लघु-अवधि पाठ्यक्रमों के विकास हेतु कार्यशाला

इस कार्यशाला में देश के 10 वरिष्ठतम विद्वान सम्मिलित हुए तथा निम्नांकित लघु अवधि पाठ्यक्रम निर्माण एवं संचालन का निर्णय लिया गया-

प्रथमचरण- (1) जैन जीवनशैली, (2) जैन पर्यावरण विज्ञान (3) जैन ज्योतिष (4) जैन प्रबन्धन

द्वितीय चरण- (1) जैन आहार विज्ञान (2) पाण्डुलिपि विज्ञान (3) जैन मनोविज्ञान (4) जैन कलह-प्रबन्धन

कुछ अन्य स्वीकृत पाठ्यक्रम- जैन शिल्प, जैन वास्तु, जैन कला, जैन शिक्षा, जैन ब्रह्माण्ड विज्ञान, जैन गणित।

सुधर्मा-सभा प्रांगण में जैन विश्वभारती के कुलपति श्री के.एल. पटावरी एवं अध्यक्ष श्री धर्मचन्द लूंकड़ का सम्मान-समारोह 'गौरव' आयोजित। समारोह के मुख्य अतिथि- राजस्थान सरकार के खान, वन एवं पर्यावरण मंत्री श्री राजकुमार रिणवां; विशिष्ट अतिथि- विधायक मनोहर सिंह; सान्निध्य- रैवासा पीठाधीश्वर स्वामी श्री राघवाचार्यजी; मुख्य वक्त्र- समणी नियोजिका प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा; मगध विश्वविद्यालय के प्रो. नलिन के. शास्त्री, 17 सितम्बर, 2016।

यूथ कॅरियर फेस्टिवल आयोजित। मुख्य अतिथि- डॉ. जसबीरसिंह, अध्यक्ष-अल्पसंख्यक आयोग, राजस्थान सरकार, जयपुर, 19 अक्टूबर, 2016।

राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला/सम्मेलनों एवं अन्य कार्यक्रमों का आयोजन

- कुलपति द्वारा नामित प्रो. दामोदर शास्त्री एवं डॉ. योगेश कुमार जैन को राष्ट्रपति सम्मान (सर्टिफिकेट ऑफ ऑनर एवं महर्षि बादरायण सम्मान) की घोषणा, 19 अगस्त, 2016।
- संस्कृत दिवस का आयोजन, 22 अगस्त, 2016।
- भारत की आजादी के लम्बे संघर्ष में अनेक वीर शहीदों की शहादत की याद में 'याद करो कुर्बानी' कार्यक्रम, 23 अगस्त, 2016।
- ''शैक्षिक एवं सामाजिक समस्याएँ: निदान एवं उपचार'' विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन, 28-29 अगस्त, 2016।
- प्रसार व्याख्यान-माला में लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत शिक्षा संस्थान, नई दिल्ली के पूर्व कुलपति प्रो. श्रीधर वशिष्ठ का व्याख्यान आयोजित, 30 अगस्त, 2016।
- शिक्षक दिवस का आयोजन, 02 सितम्बर, 2016।
- विश्वविद्यालय के तत्त्वावधान में भिक्षु विहार में मुनि विमल कुमार के सान्निध्य में पर्युषण पर्व के अवसर पर क्षमापना समारोह का आयोजन, 09 सितम्बर, 2016।
- कॅरियर काउन्सलिंग सैल के तत्वावधान में बैंकिंग-व्यवस्था पर व्याख्यानमाला का आयोजन, 16 सितम्बर, 2016।
- ''ओजोन परत संरक्षण दिवस'' के अवसर पर संस्थान द्वारा स्थानीय बाल भारती शिक्षण संस्थान प्रांगण में विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन, 17 सितम्बर, 2016।
- ग्राम दूजार में ''स्वच्छ भारत अभियान'' जागरूकता रैली का भव्य आयोजन, 22 सितम्बर, 2016।
- अहिंसा प्रशिक्षण शिविर का आयोजन। शिविर में स्थानीय मौलाना आजाद उच्च माध्यमिक विद्यालय के सौ से अधिक विद्यार्थियों ने भाग लिया, 28 सितम्बर, 2016।
- स्वच्छ भारत अभियान के अन्तर्गत सफाई अभियान का आयोजन, 29 सितम्बर, 2016।
- अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस का आयोजन, 30 सितम्बर, 2016।

- जैन विश्व भारती के नवनिर्वाचित अध्यक्ष रमेश चन्द बोहरा के दायित्व स्वीकरण समारोह में महामण्डलेश्वर स्वामी कुशालगिरी महाराज के सान्निध्य में आयोजित किया गया। समारोह में मुख्य अभिभाषण प्रस्तुत करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने जैन विद्याओं के विकास की दशा में अनुसंधान को आगे बढ़ाने की आवश्यकता बताई। समारोह में मुख्य अतिथि चूरू सांसद राहुल कस्वा ने जैन विश्व भारती को जैन समाज की गौरवमयी संस्था बताया, 04 अक्टूबर, 2016
- ''आदिवासी कविता में नारी अस्मिता का प्रश्न'' विषय पर सेमिनार, 07 अक्टूबर, 2016।
- कॅरियर काउन्सलिंग सैल द्वारा ''कॅरियर 12वीं के बाद'' विषय पर कार्यशाला आयोजित। कार्यशाला में लाड मनोहर उच्च माध्यमिक विद्यालय, भूतोड़िया बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय एवं केसरदेवी बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय की 12वीं कक्षा की छात्राओं एवं शिक्षकों ने भाग लिया, 14 अक्टूबर, 2016।
- क्षेत्रीय समन्वयक कार्यशाला का आयोजन, 24-25 अक्टूबर, 2016।
- ''शास्त्रवार्तासमुच्चय'' नामक दार्शनिक ग्रन्थ पर भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित दस दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला, दिनांक 11-20 नवम्बर, 2016।
- जीवन-विज्ञान दिवस का आयोजन, 12 नवम्बर, 2016।

- राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित ''प्राकृत साहित्य की विभिन्न विधाएँ एवं भाषात्मक वैशिष्ट्य'' राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन, 21-23 नवम्बर, 2016।
- संविधान दिवस का आयोजन, 26 नवम्बर, 2016।
- राष्ट्रीय एकता दिवस के उपलक्ष्य में एकतादौड़ का आयोजन, 28 नवम्बर, 2016।
- शिक्षा विभाग के अंतर्गत दो दिवसीय सामुहिक क्रियात्मक विकास कार्यक्रम के अंतर्गत सांस्कृतिक एवं साहित्यिक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, 07-08 दिसम्बर, 2016
- अहिंसा एवं शांति विभाग के तत्वाधान में अन्तर्राष्ट्रीय मानवाधिकार दिवस मनाया गया, 10 दिसम्बर, 2016
- सड़क सुरक्षा पर क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी डॉ नानूराम चोयल का व्याख्यान, 12 दिसम्बर, 2016
- संस्थान के अन्तर्गत तीन दिवसीय सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, 14-16 दिसम्बर, 2016
- लाडनूं क्षेत्र के प्रमुख नागरिकों के साथ विश्वविद्यालय के विकास के संबंध में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, 23 दिसम्बर, 2016।
- संस्थान के क्रीड़ा अनुभाग द्वारा वार्षिक खेल-कूद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, 17-20 दिसम्बर, 2016

नागरिकता के उदात्त मूल्यों को अपनायें- प्रो. दूगड़

'याद करो कुर्बानी' कार्यक्रम आयोजित, वृक्षारोपण किया

संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ की अध्यक्षता में 'याद करो कुर्बानी' कार्यक्रम 23 अगस्त को आयोजित किया गया। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा अगस्त माह में 15 दिवसीय पखवाड़ा आयोजित करने का निर्णय लिया गया जिसके माध्यम से उच्च शिक्षा से जुड़े सभी विद्यार्थी, शोधार्थी एवं संकाय सदस्यों को राष्ट्रीयता, देश प्रेम एवं नागरिकता के उदात्त मूल्यों हेतु प्रेरित किया जा सके। इस अवसर पर प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने विषय से सम्बन्धित विस्तार पूर्वक व्याख्यान प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के समस्त सदस्यों एवं विद्यार्थियों द्वारा सामूहिक राष्ट्रगान का संगान किया गया। विद्यार्थियों ने देशभक्ति गीतों के माध्यम से अपनी भावनाओं को व्यक्त किया। कार्यक्रम के अंत में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़, संकाय सदस्यों एवं विद्यार्थियों द्वारा वृक्षारोपण कर पर्यावरण संरक्षण के मूल्यों को आत्मसात करने का

स्वतंत्रता दिवस

सशक्त अर्थव्यवस्था के रूप में उभर रहा है देश-कुलपति

जैन विश्वभारती संस्थान में स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर 15 अगस्त आयोजित समारोह का संबोधित करते हुए कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा कि स्वतन्त्रता दिवस का यह गौरवमयी पर्व देशवासियों के लिए देशसेवा, राष्ट्रीयता एवं समग्र विकास हेतु संकल्पबद्ध होने की प्रेरणा प्रदान करता है। उन्होंने आगे कहा कि भारत देश पिछले कई दशकों से विकास के पथ पर निरन्तर गतिशील है और संपूर्ण विश्व पटल पर एक सशक्त अर्थव्यवस्था के रूप में उभर रहा है। हम सभी को देश की उपलब्धि पर गर्व होना चाहिए।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जैन विश्वभारती के न्यासी भागचन्द बरड़िया ने सभी को शुभकामनाएँ दी। मंच पर समणी नियोजिका प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा भी मंच पर उपस्थित थी। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी गई। मुमुक्षु बहनों ने संस्कृत भाषा में देशभक्ति गीत प्रस्तुत किये। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. गिरिराज भोजक ने किया।

स्व. पुष्पा जैन के नाम से दूरस्थ शिक्षा की प्रतियोगिताओं के लिये हर साल पुरस्कार राशि

उत्तर प्रदेश में राजकीय सेवा में मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी पद से सेवानिवृत डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन ने 80 वर्ष की आयु में भी दूरस्थ शिक्षा से एम.एससी. योग व जीवन विज्ञान में करने के बाद प्रभावित होकर संस्थान के दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के अन्तर्गत संचालित प्रतियोगिताओं के लिये अपनी पत्नी स्व. पुष्पा देवी जैन के नाम से हर वर्ष पुरस्कार राशि प्रदान करने की इच्छा व्यक्त की। आगामी वर्षों के लिये वे निरन्तर पुरस्कार राशि प्रदान करते रहेंगे।

'A' Grade my NAAC & 'A' Category by MHRD

जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूँ

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग अधिनियम 1956 की धारा 3 के अन्तर्गत घोषित

मान्य विश्वविद्यालय

M.A. | M.S.W. | M.Phil. | Ph.D.

B.A./B.Com. | B.A.-B.Ed B.Sc.-B.Ed | B.Ed. | M.Ed.

Placement Assistance | Separate Hostels for Male & Female | Scholarship Facility | Internet Facility | Coaching for Competition Exams

विशेषताएँ

● राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा समाजोपयोगी कार्यक्रम ● व्यक्तित्व विकास शिविर द्वारा मूल्यपरक शिक्षण एवं प्रशिक्षण ● शैक्षिक भ्रमण ● राज्य एवं राष्ट्रीय स्तरीय प्रतियोगिताओं में संभागिता ● महाविद्यालय परिसर में बुक बैंक व्यवस्था उपलब्ध ● अंग्रेजी संभाषण एवं कम्प्यूटर प्रशिक्षण जैसे पाठ्यक्रमों में रियायती शुल्क पर प्रशिक्षण ● योग्य अनुभवी शिक्षक एवं प्रबुद्ध समणी वर्ग द्वारा विशेष अध्यापन ● आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित अंग्रेजी संभाषण एवं कम्प्यूटर प्रशिक्षण हेतु प्रयोगशाला लेबोरेटरी ● शान्त, सुरक्षित, अनुशासित एवं प्रदूषण मुक्त परिवेश ● सभी पाठ्यक्रम यू.जी.सी. एवं भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त ● संभाषण, लेखन, खेलकूद, साहसिक एवं रोमांचक खेलकूद एवं सांस्कृतिक गतिविधियों से व्यक्तित्व निर्माण की दिशा में विशेष अवसर ● समृद्ध एवं विशाल पुस्तकालय की व्यवस्था ● छात्रावास एवं जिम की सुविधा ● प्राच्य विद्याओं का अध्ययन करने वाले छात्रों को स्कॉलरशिप देने का प्रावधान ● प्रतियोगी परीक्षाओं का प्रशिक्षण (NET, JRF, CA and CS) ● विषयों से सम्बन्धित विशेष कोचिंग कक्षाएं।

नियमित पाठ्यक्रम

स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम

एम.ए.

▸ जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन ▸ दर्शन ▸ संस्कृत ▸ प्राकृत ▸ हिन्दी ▸ योग एवं जीवन विज्ञान ▸ क्लीनिकल साइकोलॉजी ▸ अहिंसा एवं शान्ति ▸ राजनीतिक विज्ञान ▸ समाज कार्य ▸ अंग्रेजी ▸ एम.एड. (उपरोक्त सभी विषयों में पीएच.डी. सुविधा)

एम.फिल.

▸ जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन ▸ अहिंसा एवं शांति ▸ प्राकृत एवं जैन आगम

स्नातक पाठ्यक्रम

▸ बी.ए. ▸ बी.कॉम. ▸ बी.ए.-बी.एड. ▸ बी.एससी-बी.एड. ▸ बी.एड. (केवल महिलाओं के लिए)

डिप्लोमा पाठ्यक्रम

▸ स्टडीज इन जैनिज्म ▸ नेचुरोपैथी ▸ प्रेक्षा योग थैरेपी ▸ एन.जी.ओ. मैनेजमेण्ट ▸ बैंकिंग ▸ रूरल डेवलपमेण्ट ▸ जेण्डर इम्पॉवरमेण्ट ▸ कॉरपोरेट सोशल रिस्पोन्सिबिलिटी ▸ ह्यूमन रिसोर्स मैनेजमेण्ट ▸ काउन्सलिंग एण्ड कम्युनिकेशन ▸ राजभाषा अध्ययन

प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम

▸ प्राकृत ▸ अहिंसा एवं शांति ▸ जर्नलिज्म एण्ड मास मीडिया ▸ कम्युनिकेशन इन इंग्लिश ▸ इन्स्ट्रक्शनल मैथड्स एण्ड मीडिया ▸ एजुकेशनल साइकोलोजी ▸ योग एवं प्रेक्षाध्यान ▸ ऑफिस ऑटोमेशन एण्ड इंटरनेट ▸ फोटोशॉप ▸ एचटीएमएल- वेब डिजाईनिंग

पत्राचार पाठ्यक्रम

स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम

▸ जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन ▸ शिक्षा ▸ हिन्दी ▸ योग एवं जीवन विज्ञान ▸ अंग्रेजी ▸ अहिंसा एवं शांति

स्नातक पाठ्यक्रम

▸ बी.ए. ▸ बी.कॉम.

प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम

▸ अहिंसा प्रशिक्षण ▸ अण्डरस्टेडिंग रिलिजन ▸ जैन धर्म एवं दर्शन ▸ ह्यूमन राइट्स ▸ जैन आर्ट एंड एस्थेटिक्स ▸ ज्योतिष विज्ञान ▸ प्राकृत ▸ प्रेक्षा लाईफ स्किल

बी.पी.पी. पाठ्यक्रम

वे आवेदक जो 10+2 उत्तीर्ण नहीं हैं अथवा प्राथमिक औपचारिक योग्यता नहीं रखते हैं, लेकिन 18 वर्ष की उम्र पूर्ण कर चुके हों, विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित बी.पी.पी. परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् बी.ए. प्रथम वर्ष में प्रवेश प्राप्त कर सकते हैं।

फोन : 01581-226110, 224332, 226230 फैक्स : 227472 web : www.jvbi.ac.in e-mail : jvbiladnun@gmail.com